7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 सीएम योगी के शहर गोरखपुर में अतिक्रमण हटाने पहुंचा बुलडोजर

5 हवा इस कदर हुई खराब...

8 100 साल बाद टेस्ट में 14 ओवर से पहले ढेर हुई टीम

UPHIN51019 | वर्षः 02, अंकः 23 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 02 दिसम्बर, 2024

हेमंत सोरेन की चौथी पारी

1 13 जुलाई 2013 से 23 दिसंबर 2014

2 29 दिसंबर 2019 से 31 जनवरी 2024

3 4 जुलाई 2024 से 27 नवंबर 2024

4 ▸ 27 नवंबर 2024 से...

हेमंत सोरेन गुरुवार को चौथी बार झारखंड के मुख्यमंत्री बनेंगे। 2009 के अंत में हुए विधानसभा चुनाव में वह दुमका सीट से पहली बार विधायक चुने गए थे। जुलाई 2013 में हेमंत ने पहली बार झारखंड के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी।

सुल्तानपुर हत्याकांड

- 36 घंटे तक कमरे में रखी लाश
- नहीं निकाली थी गले की रस्सी
- कत्ल कर बरात में गया था आसिफ
- जिस बेड के नीचे लाश, उसी पर सोया

यूपी की सुल्तानपुर में कारोबारी के बेटे की अपहरण के बाद हत्या कर दी गई। कर्ज में फंसे पड़ोसी ने ही घटना को अंजाम दिया। आरोपी पड़ोसी नेपांच लाख रुपये की फिरौती मांगी थी। पुलिस ने शव बरामद कर लिया है। रस्सी से बालक के हाथ–पैर बंधे थे। मुंह में कपड़ा ठूंस दिया था।

महिलाओं के लिए विशेष कदम

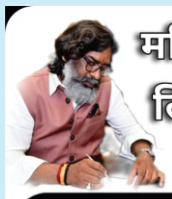

झारखंड के मुख्यमंत्री का पदभार संभालते ही हेमंत सोरेन ने अपने पहले फैसले से महिलाओं की झोली भर दी है. उन्होंने गुरुवार को सत्ता संभालते ही मंईयां सम्मान योजना के तहत महिलाओं को मिलने वाली वित्तीय सहायता बढ़ाने की घोषणा की. अब दिसंबर से महिलाओं के बैंक खातों में हर महीने 2,500 रुपये जमा किए जाएंगे.

प्रशांत किशोर ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर किया तीखा हमला

प्रशांत किशोर ने अपने बयान में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए उनकी नीतियों और प्राथमिकताओं पर गंभीर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि कोई ऐसी खबर बताइए कि नीतीश कुमार केंद्र सरकार से बात करने के लिए गए हैं कि बिहार में चीनी मिल कब से चालू होगी।मुख्यमंत्री केवल जेडीयू की सीटों के बंटवारे, एमएलसी टिकट और राज्यसभा की चर्चा के लिए दिल्ली में 2-2 दिन बैठते हैं, लेकिन बिहार के बच्चों का पलायन कैसे रोका जाए, इस पर 18–19 साल में कोई बैठक, कोई वर्कशॉप, कोई प्रयास नहीं किया गया है।

महाराष्ट्र में सियासी बवाल

पांच दिसंबर को बनेगी नई सरकार

मुंबई । महाराष्ट्र में 20 नवंबर को हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी के गठबंधन महायुति ने 288 में से 230 सीट जीतकर सत्ता बरकरार रखी। अब सीएम के चेहरे का इंतजार है। महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री के चेहरे को लगातार संशय बना हुआ है। एमवीए और महायुति में वार–पलटवार भी जारी है। मगर यह साफ नहीं हो पा रहा आखिरकार यह गद्दी मिलेगी किसे। मगर, भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने शनिवार को संकेत दिया है कि देवेंद्र फडणवीस के नाम पर मुहर लग सकती है। उनका कहना है कि महाराष्ट्र में पांच दिसंबर को महायुति गठबंधन की नई सरकार बनेगी और देवेंद्र फडणवीस अगले मुख्यमंत्री बनने की दौड़ में सबसे आगे हैं।

230 सीट से जीती थी महायुति

महाराष्ट्र में 20 नवंबर को हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के गठबंधन महायुति ने 288 में से 230 सीट जीतकर सत्ता बरकरार रखी। भाजपा 132 सीट जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जबकि शिवसेना ने 57 और एनसीपी ने 41 सीट जीतीं। हालांकि, 23 नवंबर को चुनाव नतीजों की घोषणा के बाद भी इस बात पर कोई फैसला नहीं हुआ है कि मुख्यमंत्री कौन होगा।

रविवार को हो सकती है बैठक

शिंदे, फडणवीस और पवार ने महाराष्ट्र में अगली सरकार बनाने को लेकर समझौते पर बातचीत करने के लिए गुरुवार देर रात भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय मंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। कार्यवाहक मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के सतारा जिले में अपने पैतृक गांव के लिए रवाना होने के बाद होने वाली महायुति की महत्वपूर्ण बैठक स्थगित कर दी गई, जो अब यह संभवतः रविवार को होगी।

फडणवीस मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे

भाजपा नेता ने नाम उजागर न करने की शर्त पर कहा कि नई सरकार का शपथ ग्रहण पांच दिसंबर को होगा। उन्होंने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेता फडणवीस मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे हैं।

हालांकि, अब तक इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है कि भाजपा विधायक दल अपना नया नेता चुनने के लिए बैठक कब करेगा। शिंदे ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अगले मुख्यमंत्री के संबंध में भाजपा नेतृत्व के निर्णय का पूरा समर्थन करेंगे और इस प्रक्रिया में बाधा नहीं बनेंगे। वहीं अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा ने मुख्यमंत्री पद के लिए फडणवीस का समर्थन किया है।

बेतियाहाता में 15 सौ वर्ग मीटर जमीन से हटेगा कब्जा

गोरखपुर। बिहार विधानमंडल में बेतिया एस्टेट की जमीन के अधिग्रहण से संबंधित प्रस्ताव पारित होने के बाद अब गोरखपुर और आसपास के जिलों में भी हलचल बढ़ गई है। गोरखपुर के बेतियाहाता मोहल्ले में बेतिया एस्टेट की 19.91 हेक्टेयर जमीन है, जिसमें खाली पड़े 1500 वर्ग मीटर के प्लॉट को प्रशासन पहले कब्जे में लेगा।

यहां कभी मशहूर खपरैल बंगला हुआ करता था, जो अब खंडहर में तब्दील हो चुका है। इसकी पैमाइश करा ली गई है, बाकी जमीन के लिए बिहार सरकार की गाइडलाइन का इंतजार है। बिहार के बेतिया एस्टेट की 19. 91 हेक्टेयर में करीब सात एकड़ जमीन पर आठ–दस परिवारों का कब्जा है। इन परिवारों का दावा है कि 1962–63 में एस्टेट के तत्कालीन मैनेजर बीएन भार्गव ने बसाया था। उन्होंने कोर्ट ऑफ वार्ड नियम के तहत प्रबंधन और रखरखाव के लिए मिले अधिकार का इस्तेमाल करते हुए सभी को रहने की छूट दी थी। अब इन परिवारों ने जमीन पर अपना हक जताते हुए कोर्ट में केस दायर किया है। इनमें से कुछ का खतौनी में नाम भी दर्ज हो गया है। इन्हीं के पास पहले एक खपरैल बंगला था, जो खंडहर हो चुका है। बाउंड्री भी गिर गई और अब आसपास के लोग यहां कूड़ा फेंकते हैं।

बिहार सरकार की ओर से प्रशासक के तौर नियुक्त सहायक बंदोबस्त अधिकारी बद्री गुप्ता ने बताया कि 15 सौ वर्ग मीटर जमीन को पहले कब्जे में लिया जाएगा। यह जमीन कागजात में बेतिया एस्टेट के नाम से है। इसके अलावा अन्य जमीन की जांच कराई जा रही है। कुछ जमीन के दस्तावेज नहीं हैं। पहले खतौनी में सारी जमीन का रिकॉर्ड दुरुस्त हो जाएगा, उसके बाद आगे की कार्रवाई होगी। बिहार सरकार से भी अधिग्रहण संबंधित अध्यादेश आने के बाद गाइडलाइन आएगी, उसी के हिसाब से आगे की कार्रवाई होगी।

जहां सरकारी दफ्तर हैं, उसके लिए सरकारें करेंगी बात

सहायक बंदोबस्त अधिकारी बद्री गुप्ता ने बताया कि बेतियाहाता में बिहार एस्टेट की जमीन पर कमिश्नर के अलावा कई अधिकारियों के आवास हैं। इसके अलावा नगर निगम की पानी की टंकी और सरकारी स्कूल भी हैं।

कुछ जमीन पर आवास विकास परिषद ने आवास बनवाकर आवंटित कर दिए हैं। इसके अलावा सड़कें बनी हुई हैं। ये जमीन करीब 12 से 13 हेक्टेयर क्षेत्रफल में है। इनको लेकर यूपी और बिहार सरकार के प्रतिनिधि बात करके रास्ता निकालेंगे।

आगरा के जतिन कुशवाहा ने बोशिया चैलेंजर सीरीज में जीते दो पदक, परिवार के साथ कोच को दिया सफलता का श्रेय

बेटे को सेहरे में नहीं कफन में लिपटा देखा... बेसुध हुए माता-पिता

आगरा–लखनऊ एक्सप्रेस–वे पर कार हादसे में मृत कमला नगर के राधा नगर निवासी डॉ. अनिरुद्ध का रिश्ता तय होने वाला था। धौलपुर की लड़की के परिजन इसी सप्ताह घर आने वाले थे।

बेटे की शादी को लेकर परिवार काफी खुश था। मगर, होनी में तो कुछ और ही लिखा था।

जिस बेटे के सिर पर सेहरा बांधना था, उसकी मौत से मां और पिता पूरी तरह से टूट गए हैं। घर से सिर्फ उनके करुण क्रंदन ही सुनाई दे रहा है। रिश्तेदार सांत्वना दे रहे हैं। मगर, आंसू नहीं रुक रहे।

नायक नहीं खलनायक हूं मैं...

मुंह में पिस्टल, असलहों संग खाकी का भौकाल– वीडियो वायरल

संवाद न्यूज एजेंस'ी, देवरिया। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें एक युवक कई असलहों के साथ अपने घर सहित कई जगह दिखता है। यही नहीं युवक का रील भी वायरल असलहों के साथ वायरल हो रहा है। युवक ने नायक नहीं, खलनायक हूं नामक गाने पर रील बनाई है। यही नहीं कई पुलिस कर्मियों के साथ उसने तस्वीर भी वायरल की है। युवक कोतवाली क्षेत्र का ही बताया जा रहा है। पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई है। हालांकि उक्त वीडियो व पोस्ट की पुष्टि अमर उजाला नहीं कर रहा है।

वीडियो में जहां युवक हाथ में असलहा लिए और पास में कई असलहा रखे दिख रहा है। वहीं पोस्ट में युवक कई पुलिस कर्मियों के साथ बैठकर तो खड़ा होकर तस्वीर खिंचवा कर पोस्ट की है। इन पोस्ट में उसके पास असलहा नहीं मौजूद है, लेकिन उसके द्वारा बनाई खलनायक नामक फिल्म के गाने की रील में उसके दोनों था में असलहा व मुंह में दाबे असलहा स्पष्ट दिख रहा है।

युवक ने ...नायक नहीं खलनायक हूं मैं गाने पर रील बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल किया है। कोतवाल दिलीप सिंह वीडियो व पोस्ट में दिख रहे युवक की पहचान में जुटे हुए है। अभी तक उसकी पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस जल्द ही पहचान कर गिरफ्तारी करने का दावा कर रही है।

सम्पादकीय

सम्भल–शांति बहाल हो

साम्प्रदायिक हिंसा में जल रहे उत्तर प्रदेश के सम्भल में जहां एक ओर नागरिक मिल–जुलकर शांति की राह ढूंढ रहे हैं, तो वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी की सरकार अब भी कठोर रूख अपनाये हुए है। साम्प्रदायिक हिंसा में जल रहे उत्तर प्रदेश के सम्भल में जहां एक ओर नागरिक मिल–जुलकर शांति की राह ढूंढ रहे हैं, तो वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी की सरकार अब भी कठोर रूख अपनाये हुए है। उसने तय किया है कि कथित दंगाइयों के पोस्टर शहर के चौक–चौराहों पर लगेंगे। हिंसा, आगजनी, पत्थरबाजी आदि की घटनाओं के बीच यहां न केवल कर्फ्यू लगाया गया बल्कि पुलिस की फायरिंग में 5 लोगों की मौतें भी हुई हैं। ये सभी अल्पसंख्यक समुदाय के हैं। इंटरनेट बन्द है। हिंसा को रोकने के प्रति यदि सरकार वास्तव में संजीदा है तो उसे सर्वप्रथम नेटबन्दी हटानी चाहिये और शांति बहाली के प्रयासों को प्रोत्साहन देना चाहिये। हालांकि इसकी गुंजाइश कम ही है क्योंकि ऐसी घटनाएं भाजपा के ध्रुवीकरण के एजेंडे को आगे बढ़ाती हैं। आशंका है कि सम्भल की तर्ज पर फायदा लेने के लिये भाजपा नये शहरों को निशाना न बनाने लगे।

अभी खत्म हुए राज्य के विधानसभा उपचुनाव के नतीजों में 9 में 7 सीटें जीतकर भाजपा के हौसले बुलन्द हैं। लोकसभा में जिस प्रकार वहां कांग्रेस व समाजवादी पार्टी के गठबन्धन ने उसे पटकनी दी थी, उसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मुरझाये हुए थे। इस घटना से वे जोश में लौटे हुए दिखते हैं। वैसे यहां अगले विधानसभा चुनाव में तकरीबन सवा दो वर्षों की देर है लेकिन उत्तर प्रदेश इतना बड़ा राज्य है और उस पर धीरे–धीरे जिस तरह से सपा–कांग्रेस प्रभाव डाल रहे हैं, उससे योगी को ध्रुवीकरण का माहौल पूरे राज्य में बनाने के लिये इतना समय तो चाहिये ही होगा। बहुत से शहरों को सम्भल बनाये बिना भाजपा की वहां वापसी सम्भव नहीं होगी। फिर, लोकसभा चुनाव के नतीजों ने योगी को जिस प्रकार से नरेन्द्र मोदी के पीछे कर दिया है, तो उन्हें वापस रेस में आने के लिये कुछ बड़े प्रयोग करने ही पड़ेंगे जो सम्भल जैसे होने चाहिये। अब यह सपा और अन्य विरोधी दलों का फर्ज है कि वे सम्भल में शांति प्रयासों के लिये तो सक्रिय हों ही, दंगों में पीड़ित लोगों के साथ जाकर बैठें और वहां राहत और मदद प्रदान कर अपना विरोधी दल होने का दायित्व निभायें।

उप्र के शहरों को सम्भल बनाने की आशंका अब अधिक बलवती हो गयी है क्योंकि वहां की शाही मस्जिद का सर्वे कराने की मांग को लेकर जिस प्रकार से दंगा फैला है वही फार्मूला अब राज्य भर में आजमाया जा सकता है। उधर वक्फ बोर्ड पर जो संयुक्त संसदीय समिति बिठाई गयी है, उसकी सिफारिशें यदि भाजपा की विचारधारा और मंशा के अनुकूल आती हैं तो, जिसके पूरे–पूरे अनुमान हैं, हर बड़े शहर से लेकर कस्बों तक की मस्जिदों की जमीनों को लेकर मुकदमेबाजी शुरू हो सकती है। कहना न होगा कि ये सिविल के मामले होंगे जो ज्यादातर कानून की बजाय बाहुबल एवं सरकारी प्रश्रय के जरिये निपटाये जायेंगे।

न्यायालय की इस मोड़ पर महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। थोड़ा पीछे जायें तो, सुप्रीम कोर्ट को उम्मीद थी कि बाबरी मस्जिद–रामजन्मभूमि को लेकर सुनाया गया फैसला देश भर में ऐसे सभी विवादों को खत्म कर देगा। हालांकि उस वक्त भी कई समझदारों ने चेताया था कि ऐसा नहीं होगा बल्कि अन्य मंदिरों के विवाद भी सतह पर आ जायेंगे या निर्मित किये जायेंगे। रामजन्मभूमि का मामला हल होने के पहले ही काशी और मथुरा की मस्जिदों की बातें तो हो ही रही थीं, आशंका है कि कई शहरों की महत्वपूर्ण मस्जिदों को विवादग्रस्त बनाया जायेगा जो सियासी मकसद से ही होगा। सम्भल मस्जिद के पुरातात्विक सर्वे की मांग भी इसी राजनीतिक जाल का हिस्सा है। सम्भल को अगर न सम्हाला गया और इसमें सियासी जीत की गंध मिल गयी तो इस प्रयोग को अन्यत्र दोहराने में वक्त नहीं लगेगाय क्योंकि भाजपा को केवल उत्तर प्रदेश में सफलता नहीं चाहिये वरन सभी राज्यों में चाहिये होगी।

लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटों में गिरावट आने और उसकी सरकार के दो दलों पर आश्रित हो जाने के बाद उम्मीद थी कि भाजपा हिन्दू–मुस्लिम एजेंडा को छोड़कर वास्तविक मुद्दों पर उतर आयेगी लेकिन अब अल्पसंख्यकों के खैरख्वाह माने जाने वाली दोनों पार्टियों ने, जिनके समर्थन पर मोदी सरकार टिकी हुई है, जिस प्रकार से चुप्पी साध रखी है, उससे स्पष्ट है कि मोदी और भाजपा की राह फिर से आसान बन गयी है।

आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री तथा वहां की तेलुगु देसम पार्टी के चीफ चंद्रबाबू नायडू और बिहार के सीएम तथा जनता दल यूनाइटेड के सुप्रीमो नीतिश कुमार, जिस तरह से मोदी ने दोनों को साधे रखा है, नायडू–नीतीश ने सम्भल सहित ऐसे तमाम मुद्दों पर बोलना छोड़ दिया है। इसलिये इसी सोमवार से प्रारम्भ हुए संसद के सत्र में मोदी का रौब–दाब फिर से दिखने लगा है जो मौजूदा लोकसभा के शुरुआती सत्र में गायब हो चुका था।

इस बीच जमीयत उलेमा–ए–हिंद के वकील ने सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार से दरख्वास्त की है कि 1991 के प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट के अंतर्गत धार्मिक स्थलों के सर्वेक्षणों पर तत्काल रोक लगाई जाये। इस अधिनियम के तहत 1947 वाली स्थिति को बनाये रखने का प्रावधान है– रामजन्मभूमि को छोड़कर। शीर्ष न्यायालय जो भी करेगा, वह बहुत महत्वपूर्ण होगा।

ईवीएम पर फिर उठे सवाल

महाराष्ट्र और झारखंड दोनों ही राज्यों में चुनावी नतीजे सामने आ गए और अब नयी सरकारों के गठन की तैयारी प्रारंभ हो चुकी है महाराष्ट्र और झारखंड दोनों ही राज्यों में चुनावी नतीजे शनिवार को सामने आ गए और अब नयी सरकारों के गठन की तैयारी प्रारंभ हो चुकी है। झारखंड में हेमंत सोरेन फिर से मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं, जबकि महाराष्ट्र में इन पंक्तियों के लिखे जाने तक यह तय नहीं हो पाया है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर एकनाथ शिंदे ही फिर से बैठेंगे या भाजपा इस बार देवेन्द्र फड़नवीस को प्रतीक्षा करने का इनाम देगी। महाराष्ट्र में महायुति के आपसी समीकरण किस तरह तय होंगे, यह देखना भाजपा, शिवसेना शिंदे गुट और एनसीपी अजित पवार गुट का काम है। यह तय है कि महाविकास अगाड़ी को एक बार फिर विपक्ष में ही बैठना पड़ेगा, क्योंकि नतीजे उसकी उम्मीदों के अनुरूप नहीं आए। महायुति को इतनी बड़ी जीत मिलेगी, इस बात पर लगातार हैरानी जताई जा रही है क्योंकि जमीन पर माहौल एमवीए के लिए बना हुआ दिखाई दे रहा था। अब इस पर ईवीएम और चुनाव आयोग द्वारा पेश किए गए मतदान प्रतिशत और गिने गए वोटों में दिख रहे अंतर को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

शिवसेना सांसद संजय राउत के हिसाब से यह जनता का सुनाया फैसला नहीं है, वे मांग कर रहे हैं कि एक बार चुनाव मतपत्रों यानी बैलेट पेपर से करवाएं जाएं, तो हकीकत सामने आ जाएगी। कुछ ऐसे ही आरोप कांग्रेस, शरद पवार की एनसीपी और सपा आदि दलों के नेताओं ने भी लगाए हैं। हरियाणा चुनावों में भी कांग्रेस ने इसी तरह ईवीएम में गड़बड़ी के आरोप लगाए थे कि जिन सीटों पर गणना के वक्त ईवीएम की बैटरी 90 प्रतिशत तक चार्ज थी, वहां भाजपा को जीत मिल गई। तब सवाल उठे थे कि किसी भी मशीन की बैटरी प्रयोग में होने के इतनी देर बाद भी 90 प्रतिशत तक चार्ज कैसे रह सकती है। कांग्रेस ने तब कम से कम 20 सीटों में गड़बड़ी के खिलाफ तथ्यों के साथ एक शिकायत चुनाव आयोग में दायर की थी, जिसे फौरन खारिज कर दिया गया। बल्कि इसका जवाब देने में आयोग की तरफ से जो भाषा इस्तेमाल की गई, वह भी उचित नहीं थी। हालांकि अब फिर से हरियाणा कांग्रेस ने 27 सीटों में ईवीएम और आचार संहिता के उल्लंघन जैसी शिकायतों पर आधारित एक याचिका पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय में दाखिल की है। जिस पर सुनवाई होनी है। इधर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका फिर से खारिज की गई, जिसमें मांग की गई थी कि चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए। साथ ही इसमें यह सुझाव भी दिया गया था कि मतदाताओं को खरीदने की कोशिश करता हुआ अगर कोई उम्मीदवार दोषी पाया जाता है तो उसे पांच साल तक चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य करार करना चाहिए। के एल पॉल की इस याचिका को जस्टिस पी बी वराले और जस्टिस विक्रमनाथ की बेंच ने खारिज तो कर ही दिया, साथ ही कहा कि जब आप चुनाव जीतते हैं तो ईवीएम से छेड़छाड़ नहीं होती और जब हारते हैं तो ईवीएम से छेड़छाड़ होती है।

शीर्ष अदालत की तरफ से जो तर्क अपने फैसले में सुनाया गया, वह नया नहीं है। इन चुनावों में भाजपा भी इसी तरह की बात कह रही है। महाराष्ट्र में विपक्ष ईवीएम या अन्य गड़बड़ियों का मुद्दा उठा रहा है तो उसे झारखंड की जीत याद दिलाई जा रही है। हालांकि असल सवाल इसमें गुम हो रहा है कि क्या झारखंड में भाजपा ने हाथ पीछे खींच लिए ताकि महाराष्ट की सत्ता बरकरार रखी जाए। झारखंड में इंडिया गठबंधन की जीत से ईवीएम पर सवाल उठने बंद हो जाएंगे, शायद यह सोच भाजपा की थी। लेकिन अब कुछ और उलझे हुए तार सामने आए हैं, जिनसे निष्पक्ष चुनाव के ऊपर लग गए सवालिया निशान बड़े होते जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने मतदान प्रतिशत का अंतिम आंकड़ा 66.05 फीसदी बताया, जो कुल 64,088,195 वोट होते हैं, लेकिन मतगणना में गिने गए कुल वोटों का जोड़ 64,592,508 आया, जो कुल पड़े वोटों से 504,313 अधिक है। पांच लाख वोटों का यह अंतर क्यों और कैसे आया, इसका संतोषजनक दवाब निर्वाचन आयोग को देना चाहिए। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में बड़े दिलचस्प आंकड़े सामने आए हैं, अष्टी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान से 4,538 अधिक वोट गिने गए। यानी जितने वोट पड़े नहीं, उससे ज्यादा गिने गए। वहीं उस्मानाबाद निर्वाचन क्षेत्र में जितने वोट डाले गए और जितने गिने गए, उनमें 4,155 वोटों का अंतर रहा। नवापुर विधानसभा क्षेत्र अजा आरक्षित है, यहां निर्वाचन आयोग के मुताबिक मतदाताओं की कुल संख्या 2,95,786 है और मतदान 81.15 फीसदी हुआ। इसका मतलब 2,40,022 वोट पड़े। लेकिन कुल 2,41,193 वोटों की गिनती हुई। यानी 1,171 वोट अधिक गिने गए और हैरानी की बात ये है कि यहां जीत का अंतर 1,122 वोटों का था। इसी तरह मावल विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या 3,86,172 है और मतदान 72.59 फीसदी हुआ। इसका मतलब 2,80,319 वोट पड़े। हालांकि, आयोग द्वारा प्रकाशित नतीजों के अनुसार, कुल वोटों की गिनती 2,79,081 थी, जो डाले गए वोटों से 1,238 वोट कम है।

कहीं मतदाताओं से ज्यादा वोटों की संख्या रही, कहीं कुल मतदान से कम या ज्यादा वोटों की गिनती हुई। भले ही 288 सीटों में से कुछ ही सीटों पर ऐसी गड़बड़ी सामने आई है, लेकिन इसकी क्या गारंटी है कि बाकी जगह पर इसी तरह की कोई और गड़बड़ी नहीं हुई होगी। महाराष्ट्र में कई विधानसभा सीटों पर जीत–हार का अंतर भी बेहद मामूली रहा। कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले तक अपनी सीट बमुश्किल 208 वोटों से जीत पाए, मालेगांव सीट पर एआईएमआईएम प्रत्याशी ने महज 162 वोटों से अपनी सीट बचाई। ऐसे में अगर हजार–दो हजार का अंतर मतदान के वास्तविक आंकड़े और गिने गए वोटों में दिख रहा है, तो फिर नतीजों में उलटफेर होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट या निर्वाचन आयोग बैलेट पेपर यानी मतपत्रों से चुनाव की बात मौजूदा वक्त में स्वीकार नहीं करेगा, यह जाहिर है। हालांकि दुनिया के कई देशों ने ईवीएम से किनारा कर लिया है। लेकिन भारत अभी बाकी दुनिया की राह पर नहीं चलना चाहता। समय और संसाधन की बचत जैसे तर्क ईवीएम के पक्ष में दिए जाते हैं। हालांकि यह विचारणीय मुद्दा है कि समय और संसाधन बचाते हुए क्या हम लोकतंत्र को खो रहे हैं।

बांग्लादेश मीडिया डा. मोहम्मद यूनुस के भ्रमित विचारों के खिलाफ हो गया

अमेरिका के भीतर भी, यूनुस ने डेमोक्रेट्स का महत्वपूर्ण समर्थन खो दिया है, जिन्हें ट्रम्प ने सत्ता से बाहर कर दिया है। इस स्थिति में, एक पर्यवेक्षक ने कहा, यूनुस को भारत–बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों को नुकसान पहुंचाने के लिए कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। अमेरिका के भीतर भी, यूनुस ने डेमोक्रेट्स का महत्वपूर्ण समर्थन खो दिया है, जिन्हें ट्रम्प ने सत्ता से बाहर कर दिया है। इस स्थिति में, एक पर्यवेक्षक ने कहा, यूनुस को भारत–बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों को नुकसान पहुंचाने के लिए कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इस तरह का कदम बांग्लादेश और लाखों लोगों की पीड़ा को और बढ़ा देगा, जो इस पीड़ा के समय में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसा अक्सर नहीं होता कि किसी देश के नेता द्वारा विदेशी मीडिया को दिया गया साक्षात्कार देश में कोई बड़ा राजनीतिक विवाद पैदा कर दे। लेकिन हाल ही में कार्यवाहक बांग्लादेश प्रशासन के मुख्य सलाहकार डॉ. मोहम्मद यूनुस द्वारा दिये गये साक्षात्कार ने ऐसा ही किया है, जिससे उनके इरादों पर सवाल उठाते हुए एक नयी घरेलू बहस शुरू हो गई है।

डॉ. यूनुस को इसके लिए खुद को ही दोषी मानना चाहिए। मीडिया के साथ प्रत्येक बातचीत में भारत से संबंधित किसी भी प्रश्न या मुद्दे से निपटने में उनकी बेचैनी अधिक से अधिक स्पष्ट होती जाती है। इस बार भारत से प्रकाशित एक प्रमुख अंग्रेजी दैनिक के साक्षात्कारकर्ताओं के साथ प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान यूनुस ने दिल्ली से पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद की बांग्लादेश वापसी सुनिश्चित करने का आह्वान किया। मुख्य सलाहकार ने कहा कि उनकी पार्टी (अवामी लीग) के लंबे शासन के दौरान भ्रष्टाचार, हत्याओं और अन्य हमलों के कई आरोपों के मद्देनजर उन्हें बांग्लादेश में मुकदमे का सामना करना चाहिए। प्रमुख एएल नेताओं सहित कई गिरफ्तारियां पहले ही हो चुकी हैं, क्योंकि वर्तमान प्रशासन ने पीड़ित विपक्षी नेताओं और आम लोगों से कार्यवाहक सरकार को प्राप्त कई आरोपों की आधिकारिक जांच शुरू कर दी है। वह 5 अगस्त को एक उग्र सशस्त्र भीड़ के हमले से बचने के लिए भारत आ गई थीं और यहीं शरण ले रही थी। लेकिन उन्होंने अपने निर्वासन से अपने राजनीतिक बयान जारी रखा। बांग्लादेशी टिप्पणीकारों के अनुसार, डॉ. यूनुस ने चेतावनी दी कि भारत द्वारा ढाका की उनके प्रत्यावर्तन की मांग को नजरंदाज करने की स्थिति में भारत–बांग्लादेश संबंधों पर असर पड़ सकता है।

हमेशा की तरह सतर्क बांग्लादेशी टिप्पणीकारों ने प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों में सार्वजनिक रूप से यूनुस से सवाल करने का यह मौका भुनाने में कोई समय नहीं गंवाया। एक विश्लेषक ने उनके इरादों पर सवाल उठाया। उन्होंने बताया कि पहले से ही ऐसी रिपोर्टें थीं (जिनका ढाका अधिकारियों ने खंडन नहीं किया था) कि नये शासक शेख हसीना के खिलाफ इंटरपोल अधिकारियों से शिकायत करेंगे, अगर वह ढाका नहीं लौटीं। इसलिए डॉ. यूनुस को तुरंत निम्नलिखित सवालों का जवाब देना चाहिए– 1. क्या बांग्लादेश ने आधिकारिक तौर पर भारत सरकार से श्रीमती वाजेद को वापस भेजने का अनुरोध किया था? अगर जवाब हां में है, तो भारत की प्रतिक्रिया का विशिष्ट विवरण क्या था? सच तो यह है कि ढाका ने इस मामले में अभी तक भारत से कोई अनुरोध नहीं किया है। 2. ऐसे में बांग्लादेश के अधिकारी भारत से बात किए बिना ही इस मुद्दे को इंटरपोल अधिकारियों के पास ले जाने की बात क्यों कर रहे थे?

इससे यह स्पष्ट था कि डॉ. यूनुस ने एक बार फिर हर मोड़ पर भारत के साथ विवाद पैदा करने की कोशिश की थी। इंटरपोल के बारे में बातचीत भारत पर दबाव बनाने की एक भद्दी कोशिश थी और बांग्लादेश ने एक बहुत ही संवेदनशील मुद्दे पर जल्दबाजी में कदम उठाया।

एक वरिष्ठ टिप्पणीकार ने कहारू डॉ. यूनुस ने मुख्य सलाहकार बनने के बाद भारत का जिक्र करते हुए कहा था कि नया बांग्लादेश अपने पड़ोसी के साथ अच्छे संबंधों की उम्मीद करता है। अगर कोई समस्या होती है, तो दिल्ली को यह समझना चाहिए कि दक्षिण एशिया में भारतीय हितों को नुकसान हो सकता है।

यूनुस ने कहा था कि– अगर भारत–बांग्लादेश संबंधों में गिरावट आती है, तो भारत को अपने पूर्वोत्तर क्षेत्र, बांग्लादेश या यहां तक कि म्यांमार में भी नई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है... इसका मतलब यह है कि नये गैर–अवामी लीग सरकार के अधिकारी बांग्लादेशी क्षेत्र में अलगाववादी तथा उग्रवादी संगठनों को पनाह देना शुरू कर सकते हैं और अन्य चीजों के अलावा पहले की तरह उनके भारत विरोधी अभियानों में उनकी मदद कर सकते हैं। भारत के लिए, वर्तमान स्थिति में दिल्ली की मुख्य चिंता असुरक्षित हिंदू अल्पसंख्यक आबादी के खिलाफ बार–बार होने वाले हमले हैं। पिछले तीन महीनों में बांग्लादेश के विभिन्न जिलों में इस तरह के हमलों को दर्शाने वाली रिपोर्ट और चौंकाने वाले वीडियो सामने आये हैं। इनमें से कई में हिंदुओं के खिलाफ आगजनी और हमले और उनकी संपत्ति की लूटपाट आदि दिखाई गई है। एमनेस्टी इंटरनेशनल और अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे संगठनों ने इसकी निंदा की थी। हमलों की दुनिया भर में निंदा की गई थी, लेकिन ढाका स्थित शासक चुप रहे।

फिर भी डॉ. यूनुस ने इन चिंताओं को संबोधित करने के बजाय, हिंदुओं के खिलाफ अत्याचारों की सभी रिपोर्टों को श्निराधार और अतिरंजित्य बताकर अधीरता से खारिज कर दिया, जिससे इस्लामी चरमपंथियों को अल्पसंख्यकों के प्रति अपने दृष्टिकोण में और अधिक आक्रामक होने का प्रोत्साहन मिला। वास्तव में, उन्होंने हमेशा की तरह भारतीय अखबार के साथ अपने नवीनतम साक्षात्कार में ऐसे आरोपों का खंडन किया! सबसे मजबूत विपक्षी दल, बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के नेताओं सहित वरिष्ठ राजनेताओं ने यूनुस को भारत जैसे देशों के साथ अच्छे संबंध बनाये रखने की आवश्यकता के बारे में स्पष्ट रूप से याद दिलाया है। उन्होंने 1970–71 में बांग्लादेशी स्वतंत्रता के संघर्ष में दिवंगत शेख मुजीबुर रहमान या एएल द्वारा निभाई गई भूमिका को पूरी तरह से नकारने के बारे में नये प्रशासन द्वारा अपनाये गये रुख का विरोध किया।

कुछ लोगों ने पूछा था कि 1970–71 में यूनुस कहां थे, जब पाकिस्तानियों ने हजारों निर्दोष बंगालियों का कत्लेआम किया था और सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान कुर्बान कर दी थी? वर्तमान में प्रतिबंधित एएल को खोई हुई राजनीतिक जमीन वापस पाने में किसी भी तरह की मदद करने से परे बीएनपी के नेतृत्व वाली सभी विपक्षी ताकतें अब चाहती हैं कि यूनुस घोषणा करें कि वे कार्यवाहक शासन के कार्यकाल को समाप्त करते हुए अगले चुनाव कब करा सकते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि एएल चुनाव लड़े, ताकि निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित हो सके। हाल के दिनों में अधिकांश टीवी पैनल चर्चाओं या अखबारों की टिप्पणियों के लहजे को देखते हुए, बीएनपी और अवामी लीग विरोधी नेता भी यूनुस पर अविश्वास करने लगे हैं, जिन्हें वे एक राजनीतिक व्यक्ति के रूप में नहीं देखते हैं।

जैसा कि एक टिप्पणीकार ने बताया कि 5 अगस्त के तुरंत बाद नोबेल पुरस्कार विजेता मुख्य सलाहकार का लोगों, सभी विपक्षी दलों, पश्चिमी लोकतांत्रिक दलों सहित पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और उनकी पत्नी हिलेरी के नेतृत्व वाले शक्तिशाली डेमोक्रेट्स, यूरोपीय संघ के नेताओं, गैर सरकारी संगठनों, मानव संसाधन समूहों और थिंक टैंकों ने स्वागत किया था। उनसे वायदा किया गया था कि वह समय से पहले चुनाव और प्रमुख प्रशासनिक सुधार करेंगे का वादा किया गया था, जबकि साथ ही एएल को हाशिए पर डालने के लिए एक ऊर्जावान अभियान भी जोरदार तरीके से शुरू किया गया था।

एमएमएमयूटी के 156 विद्यार्थियों को मिला कैंपस प्लेसमेंट

सत्र में 250 से ज्यादा को मिली नौकरी

गोरखपुर। मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के 156 छात्र–छात्राओं को विभिन्न कंपनियों में प्लेसमेंट मिला है। इन विद्यार्थियों को चार से आठ लाख रुपये तक का वार्षिक पैकेज ऑफर किया गया है। एडु स्टेशन में सर्वाधिक 93 विद्यार्थियों को छह लाख के पैकेज पर प्लेसमेंट ऑफर मिला है। इस तरह वर्तमान सत्र में प्लेसमेंट पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या 250 हो गई है।

एमएमएमयूटी के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के चेयरमैन प्रो. वीके द्विवेदी ने बताया कि 'एडु स्टेशन' कंपनी में बीटेक के 79 विद्यार्थियों को प्लेसमेंट मिला है। इसके अलावा एमसीए के छह, एमबीए के पांच और बीबीए के तीन विद्यार्थियों को प्लेसमेंट मिला है। इसके अलावा इंटेलीजेन एआई में दो विद्यार्थियों को आठ लाख का पैकेज, हाइपर डॉट में एक छात्र को 6.6 लाख, आईबीएम में 17 विद्यार्थियों को 4.5 लाख और स्ट्रीबू में तीन विद्यार्थियों को 4.5 लाख के पैकेज पर प्लेसमेंट मिला है। हाइक एजुकेशन में पांच छात्रों को 6.42 लाख और दो को 5.82 लाख का पैकेज मिला है। एकमे ग्रेड ने 13 और आस मॉसिस ने चार विद्यार्थियों को चार–चार लाख रुपये का वार्षिक पैकेज ऑफर किया है।

इन कंपनियों में चल रहा कैंपस ड्राइव

प्लेसमेंट सेल की समन्वयक सुकन्या पांडेय ने बताया कि एलएंडटी, आदित्य बिड़ला, एमजी मोटर्स, जीएलएम मथुरा जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में प्लेसमेंट के लिए ड्राइव चल रही है। इसके अलावा दर्जनों कंपनियां प्लेसमेंट के लिए आ रही हैं।

कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने बताया कि इस सत्र में अब तक 250 विद्यार्थियों को प्लेसमेंट मिला है। एनआईआरएफ रैंकिंग के टॉप–100 इंजीनियरिंग संस्थानों में शामिल होने के बाद पूरा विश्वास है कि छात्रों को और बेहतर पैकेज पर प्लेसमेंट मिलेगा। प्लेसमेंट ड्राइव के लिए कई प्रतिष्ठित कंपनियां आ रही हैं।

सीएम योगी के शहर गोरखपुर में अतिक्रमण हटाने पहुंचा बुलडोजर

वार्ड नंबर 66 में सिधारीपुर से उपकेंद्र तक 25 लोगों ने सड़क पर किया है अतिक्रमण बाउंड्री और रैंप तोड़ने पहुंची थी टीम, अचानक गायब हुए एक्सईएन, पीएसी बुलाई गई

सूरजकुंड क्षेत्र में चला नगर निगम का बुलडोजर,ध्वस्त किए गए निर्माण

संवाददाता, गोरखपुर। वार्ड नंबर 66 नेताजी सुभाष चंद्र बोस नगर के सूरजकुंड में अतिक्रमण हटाने पहुंची नगर निगम की टीम को नागरिकों के साथ ही पार्षदों के विरोध का सामना करना पड़ा। वार्ड नंबर 60 विकास नगर के पार्षद अजय ओझा बुलडोजर के सामने धरने पर बैठ गए। उन्होंने कहा कि बुलडोजर उनके ऊपर से होकर गुजरेगा तभी अतिक्रमण हटेगा। काफी प्रयास के बाद भी विरोध के स्वर नहीं थमे तो नगर निगम के अधिकारियों ने पीएसी बुलाई। पीएसी आने के बाद बातचीत के बीच 25 घरों की चहारदीवारी, रैंप और सीढ़ियों को तोड़ा गया। कुछ दुकानों और पार्किंग के स्थान को तोड़ने के लिए नागरिकों को दो दिन की मोहलत दी गई है।

सिधारीपुर से उपकेंद्र तक नगर निगम को नाला का निर्माण कराना है। जिस जगह से नाला गुजरना है वहां चहारदीवारी, रैंप व सीढ़ियों का निर्माण हो गया है। कुछ लोगों ने दुकानें भी बना ली हैं। बुधवार सुबह नौ बजे नगर निगम के पांच बुलडोजर के साथ प्रवर्तन बल की टीम पहुंची। थोड़ी देर बाद सहायक अभियंता शैलेश कुमार और अधिशासी अभियंता अमरजीत भी पहुंचे। नगर निगम ने पहले ही निशान लगा दिया था। जैसे ही कार्रवाई शुरू हुई विकासनगर के पार्षद अजय ओझा बुलडोजर के सामने आ गए। उनकी नगर निगम कर्मियों से नोकझोंक शुरू हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि पार्षद का तेवर देख अधिशासी अभियंता मौके पर अपना वाहन छोड़कर चले गए। वह काफी देर बाद लौटे। अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह ने मामला संभाला।

सूरजकुंड में अतिक्रमण हटाने पहुंची नगर–निगम की टीम को नागरिकों के साथ ही पार्षदों के विरोध का सामना करना पड़ा। वार्ड नंबर 60 विकास नगर के पार्षद अजय ओझा बुलडोजर के सामने धरने पर बैठ गए। काफी प्रयास के बाद भी विरोध के स्वर नहीं थमे तो नगर निगम के अधिकारियों ने पीएसी बुलाई। पीएसी आने के बाद बातचीत के बीच 25 घरों की चहारदीवारीरैंप और सीढ़ियों को तोड़ा गया।

अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह ने कहा कि सिधारीपुर से उपकेंद्र तक सड़क की चौड़ाई 18 मीटर है, लेकिन कई लोगों ने सड़क पर निर्माण करा लिया है। इस कारण कहीं चार तो कहीं छह मीटर तक सड़क पतली हो गई है। नाला निर्माण के लिए 50 लाख रुपये पहले से स्वीकृत हैं। नागरिकों की सहूलियत के लिए निर्माण कराया जा रहा है। सभी को डेढ़ महीने पहले से ही बताया जा रहा है। दो दिन पहले नगर आयुक्त से मुलाकात में भी कहा गया था कि अतिक्रमण हटाया जाएगा। समझा–बुझाकर अतिक्रमण हटा दिया गया है।

पार्षद के पति ने लगाया मनमानी का आरोप

वार्ड नंबर 66 की पार्षद आरती सिंह के पति मोहन सिंह ने नगर निगम पर मनमानी का आरोप लगाया। कहा कि रसूलपुर से सिधारीपुर तक दो किलोमीटर के दायरे में सैकड़ों अतिक्रमण हैं लेकिन नगर निगम के अधिकारी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जो लोग विरोध नहीं करते, उन्हें ही दबाया जा रहा है। नागरिकों को न तो नोटिस दिया गया और न ही मौका। प्रख्यात गायक मनोज मिश्र मिहिर ने कहा कि नगर निगम ने जबरदस्ती कार्रवाई की है। चहारदीवारी के बाहर भी नाला बनाने के लिए पर्याप्त जगह है लेकिन नागरिकों को परेशान किया गया। मुन्ना श्रीवास्तव, बसंत, अविनाश तिवारी, रमाकांत शर्मा, राजीव श्रीवास्तव, संजय प्रजापति, राजेश श्रीवास्तव, दुर्गेश दुबे, राजेश चौबे, हरिओम मिश्र, रमन रस्तोगी, संजय मिश्र आदि की चहारदीवारी, रैंप व सीढ़ी तोड़ी गई है।

घर से मंगेतर को लहंगा दिलाने ले गया जवान

जंगल में गला दबाकर लेने लगा जान

गोरखपुर। क्षेत्र के पोखरियहवा निवासी सेना के जवान अनूप चौहान पर मंगेतर का गला दबाकर हत्या की कोशिश का आरोप है। युवती की मां ने तहरीर देकर आरोप लगाया कि सोमवार को अनूप लहंगा सिलवाने के लिए कहकर बेटी को साथ ले गया। रास्ते में कुलदेवी के दर्शन कराने के बहाने जंगल में ले जाकर गला दबाकर बेटी की हत्या की कोशिश की। गंभीर हालत में बेटी को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। गुलरिहा थाने की पुलिस ने केस दर्ज करके अनूप चौहान को गिरफ्तार कर जेल भिजवा दिया है। अनूप चौहान वर्तमान में राजस्थान में तैनात है।

गोरखनाथ इलाके की महिला ने तहरीर देकर बताया कि बेटी की शादी गुलरिहा क्षेत्र के पोखरियहवा निवासी अनूप से तय हुई थी। 20 नवंबर को तिलक का कार्यक्रम हुआ। चार दिसंबर को शादी होनी थी। तिलक के दिन दहेज के सात लाख रुपये भी दिए गए थे। 25 नवंबर को कॉल कर बेटी को खरीदारी के बहाने अनूप अपने साथ ले गया। उसने टिकरिया जंगल में स्थित अपनी कुलदेवी का दर्शन करने की बात कही। उसकी बातों में आकर बेटी चली गई। महिला ने बताया कि टिकरिया जंगल में सुनसान जगह पहुंचते ही मंगेतर ने बेटी का गला उसके ही दुपट्टे से दबा दिया। विरोध पर उसकी पिटाई भी की। मरा समझकर वहां से भाग निकला।

दो घंटे बाद होश आने पर बेटी ने राहगीरों की मदद से घरवालों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे घरवालों ने डायल 112 को सूचना देने के साथ ही एंबुलेंस की मदद से उसे भटहट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। वहां उसकी हालत गंभीर देखते हुए डॉक्टरों ने मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। इधर, केस दर्ज करने के बाद आरोपी घटना से इन्कार कर रहा था। पुलिस ने जब मोबाइल का सीडीआर निकलवाई तो आरोपी की पोल खुली। इस संबंध में एसपी सिटी अभिनव त्यागी ने बताया कि केस दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। मोबाइल का सीडीआर भी निकलवाई गई थी, आरोप सही मिला तब केस दर्ज किया गया।

पीड़िता की बड़ी बहन है सिपाही, उसी से शादी करना चाहता था अनूप

बताया जा रहा है कि पीड़िता की बड़ी बहन उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत है। आरोपी अनूप के मौसा अगुआ के रूप में लड़की के घर सिपही युवती से शादी का प्रस्ताव लेकर पहुंचे थे। सिपाही युवती ने शादी से इन्कार करते हुए बताया कि वह घर की इकलौती कमाने वाली है। उसके पिता की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। ऐसे में यदि वह उसकी छोटी बहन से शादी करना चाहे तो दान दहेज देकर साथ कर सकती है।

छाएगा घना कोहरा

बदलेगा मौसम का मिजाज, बढ़ जाएगी ठंड

संवाद न्यूज एजेंसी, गोरखपुर। मौसम विभाग ने गोरखपुर समेत आसपास जिलों में घना कोहरा छाने का अनुमान जताया है।

कोहरा छाने से अधिकतम व न्यूनतम तापमान में गिरावट आने से ठंड बढ़ेगी। पश्चिमी विक्षोभ पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र को प्रभावित करने की संभावना है। इसके बाद पारा और गिरने की संभावना जताया गया है।

एक सप्ताह पूर्व लगातार अधिकतम व न्यूनतम तापमान में लगातार गिरावट हो रहा थी। अधिकतम तापमान 25.7 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 10.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। लेकिन, पश्चिमी विक्षोभ कमजोर पड़ने पर ठंड ठहर सा गया।

पिछले तीन दिन में अधिकतम व न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्सियस की बढ़ोत्तरी दर्ज किया गया है।

मंगलवार को अधिकतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 12.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यह सामान्य से आंशिक से कम है।

मौसम विभाग ने मंगलवार से पुरुवा हवा चलने के चलते पूर्व की ओर से हवा के सहारे नमी आने से आर्द्रता के प्रतिशत को निरंतर बढ़ाने का अनुमान जताया है। इसके चलते घना कोहरा छाया रहेगा।

गिड़गिड़ाता रहा बेबस बुजुर्ग... नहीं पसीजे धरती के भगवान

हाथ जोड़ मिन्नतें करता रहा... फिर भी नहीं मिला वेंटिलेटर

लखनऊ,संवाददाता । यूपी के लखनऊ में किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के हृदय रोग विभाग (लारी कार्डियोलॉजी) में दुबग्गा के छंदोइया निवासी अबरार अहमद (60) को वेंटिलेटर नहीं मिल पाया। अबरार हाथ जोड़कर वेंटिलेटर के लिए मिन्नतें करते रहे। इस पर भी डॉक्टर नहीं पसीजे। उन्हें डॉ. राममनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान रेफर कर दिया गया। रास्ते में ही अबरार की सांसें थम गईं। अबरार अहमद की वर्ष 2018 में लारी में ही एंजियोप्लास्टी हुई थी।

हालत खराब होने पर रविवार रात करीब 12:30 बजे उनको उनको लारी की इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। यहां पर डॉक्टरों ने उनकी हालत गंभीर होने की बात कहते हुए वेंटिलेटर की जरूरत बताई। साथ ही वेंटिलेटर खाली नहीं होने की बात कहते हुए उनको लोहिया संस्थान या फिर पीजीआई जाने के लिए कहा। परिवारवालों ने इतना समय नहीं होने की बात कहते हुए डॉक्टरों से मिन्नतें कीं। अबरार के बेटे सैफ के मुताबिक पिता भी हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते रहे, लेकिन डॉक्टर नहीं पसीजे। मायूस होकर हम पिता को लेकर लोहिया संस्थान गए। रास्ते में ही उनकी मौत हो गई।

गिड़गिड़ाने पर डाक्टर बोले ज्यादा शोर कर रहे हो, इसलिए नहीं देखेंगे

सैफ के मुताबिक इमरजेंसी में उनके पिता को तीन–चार इंजेक्शन लगाए गए। इसके बाद उनकी नाक और मुंह से खून आने लगा। पिता के गिड़गिड़ाने पर डॉक्टर बोले ज्यादा शोर कर रहे हो, इसलिए नहीं देखेंगे। मरीज की मौत के बाद वजीरगंज थाने में कार्रवाई के लिए तहरीर भी दी गई है।

केजीएमयू की सफाई–इलाज किया और उपलब्ध कराई एंबुलेंस

केजीएमयू के प्रवक्ता प्रो. सुधीर सिंह के मुताबिक अबरार अहमद को दिल की गंभीर बीमारी थी। वर्ष 2018 में कोरोनरी आर्टरी डिजीज की पुष्टि होने के बाद उनकी एंजियोप्लास्टी की गई थी। एंजियोप्लास्टी के बाद डॉक्टर ने समय–समय पर उन्हें जांच के लिए बुलाया था, लेकिन वे फॉलोअप के लिए ओपीडी में नहीं आए। देर रात तबीयत बिगड़ने पर मरीज को हार्ट फेल्योर की गंभीर अवस्था में इमरजेंसी में लाया गया। जहां डॉक्टरों ने तुरंत भर्ती कर ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा। जरूरी जांचें कराई गईं। हालत गंभीर होने की वजह से डॉक्टरों ने वेंटिलेटर की जरूरत बताई।

लोहिया संस्थान के लिए रेफर किया गया

लारी कार्डियोलॉजी के सभी आईसीयू–वेंटिलेटर बेड फुल थे। इसलिए उन्हें पीजीआई और लोहिया संस्थान के लिए रेफर किया गया। मरीज को ले जाने के लिए संस्थान ने एंबुलेंस भी उपलब्ध कराई, लेकिन दुर्भाग्य से उनकी जान नहीं बचाई जा सकी।

युवक को भारी वाहन ने कुचला

फिर घंटों रौंदती रही गाड़ियां, सड़क पर बिखरे लोथड़े

गठरी में बांधकर ले गई पुलिस

लखनऊ,संवाददाता। युवक को भारी वाहन ने कुचल दिया। फिर लाश को गाड़ियां घंटों रौंदती रही। सड़क पर शव के लोथड़े बिखर गए। पुलिस गठरी में बांधकर ले गई। राजधानी लखनऊ में सड़क पार कर रहे युवक को किसी भारी वाहन ने रौंद दिया। हादसे में उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े हो गए।

पुलिस के पहुंचने तक कई वाहन शव के ऊपर से गुजर चुके थे। पुलिस ने शव के टुकड़ों को गठरी में भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। युवक की पहचान नहीं हो सकी है। यह दर्दनाक हादसा सुलतानपुर हाईवे पर रविवार देर रात हुआ।

गोसाईंगंज थाने से 400 मीटर की दूरी पर स्थित संकल्प पेट्रोल पंप के पास रात करीब 11. 35 बजे डिवाइडर पार कर दूसरी तरफ जा रहे 30 वर्षीय युवक को किसी तेज रफ्तार भारी वाहन ने रौंद दिया।

हादसे में उसके कई टुकड़े हो गए। सूचना पर जब तक पुलिस पहुंचती, तब तक कई वाहन शव को रौंद चुके थे। पुलिस ने किसी तरह शव के टुकड़ों को सड़क से समेटा और गठरी में भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। इंस्पेक्टर ब्रजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि शिनाख्त की कोशिश की जा रही है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहे हैं।

अब कपड़ों ही से हो सकती है पहचान

इंस्पेक्टर ने बताया कि शव की हालत अब ऐसी नहीं रह गई है कि उसकी पहचान हो सके। युवक की पेंट व शर्ट को सुरक्षित रखा है। यही शिनाख्त का एक मात्र जरिया है। फिलहाल 72 घंटे के लिए शव को पोस्टमार्टम हाउस पर रखा जाएगा। पहचान न होने पर पोस्टमार्टम के बाद पुलिस अंतिम संस्कार कर देगी।

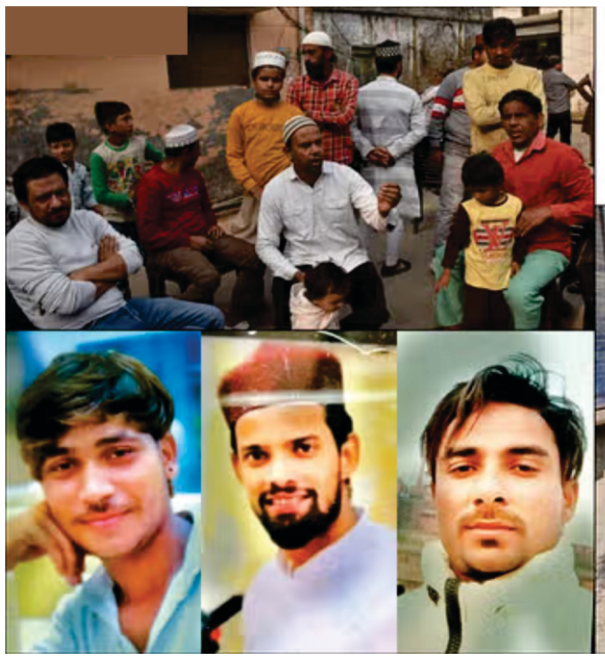

संभल हिंसा

पांच मिनट की गोलीबारी... जिंदगीभर का दर्द

संभल हिंसा–अब्बू कब आएंगे...

8 साल की सहर अम्मी से पूछ रही ये सवाल, जिंदगीभर का दर्द दे गया पांच मिनट का बवाल

संभल। संभल में जामा मस्जिद के पास हुई हिंसा में पांच की जान चली गई। इसमें चार की मौत गोली लगने से हुई। पुलिस और परिजन के बीच आरोप–प्रत्यारोप का सिलसिला जारी है। यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि गोली किस ओर से चली। इस घटना ने कई परिवारों को जीवनभर का दर्द दे दिया है। संभल की जामा मस्जिद के पास हुए बवाल में जो कुछ हुआ उसे खबरों व सोशल मीडिया के जरिये सबने देखा। अब इस बवाल के बाद जिन परिवारों ने अपनों को खोया है, उनका दर्द देख पाना किसी के लिए आसान नहीं है। घंटों चले बवाल के दौरान हुई पांच मिनट की गोलीबारी पांच परिवारों को जिंदगीभर का दर्द दे गई। तमाम तरह के आरोपों के बीच एक पहलू यह भी है कि किसी बूढ़ी मां को अपने बेटे व किसी मासूम को अपने पिता का इंतजार है। बदहवास परिजन दरवाजे की ओर दौड़े जा रहे हैं कि हमारा अपना अब आता ही होगा। पड़ोसी, रिश्तेदार उन्हें दिलासा दे रहे हैं, लेकिन रो–रोकर पथराई आंखें अब भी यह मानने को तैयार नहीं कि उनका इंतजार कभी खत्म नहीं होगा।

सोशल मीडिया पर वायरल होता रहा कैफ का फोटो नहीं पहचान पाए परिजन

मोहल्ला तुर्तीपुरा निवासी मो. कैफ (17) का मरणासन्न अवस्था में एक फोटो रविवार को सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ। इसमें टी–शर्ट व जींस पहने एक लंबा सा युवक पत्थरों के बीच जमीन पर मृत पड़ा है। उसकी टी–शर्ट पर सीने के पास खून के धब्बे हैं, लेकिन चेहरा स्पष्ट नहीं दिख रहा है। बवाल के बाद यह फोटो सोशल मीडिया के जरिये कैफ के परिजनों के पास भी पहुंचा, लेकिन वह पहचान नहीं पाए कि यह हमारा ही बच्चा है। परिजनों के मुताबिक सुबह 8रू30 बजे कैफ प्लास्टिक के आइटम लेकर फेरी लगाने निकला था। शाम को उसके चचेरे भाई फरदीन के पास फोन आया कि गोली लगने से कैफ की मौत हो गई है। पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए ले गई है। कैफ के मामा वसीम ने बताया कि देर रात कैफ का शव घर पहुंचा और थोड़ी दार बाद ही सुपुर्द–ए–खाक कर दिया गया। वह अपने चार भाइयों में तीसरे नंबर का था। परिजनों के मुताबिक उसकी मां लंबे समय से बीमार हैं, अब जवान बेटे की मौत का उन्हें गहरा सदमा लगा है।

बुलेट पर आ जाओ मेरे लाल... आवाज लगाकर दौड़ पड़ती हैं नईम की मां

जामा मस्जिद से महज 500 मीटर दूर मोहल्ला कोट गर्वी के तबेला इलाके में नईम (35) का घर है। रविवार को बवाल के बीच गोली लगने से उनकी मौत हो गई थी। देर रात दफन भी हो चुका है, लेकिन रो–रोकर उनकी मां बदहवास हो गई हैं। वह अपना नाम तक नहीं बता पा रही हैं। हर पांच मिनट बाद बेटे को आवाज लगाते हुए दरवाजे की ओर दौड़ पड़ती हैं। कहती हैं 'मेरे लाल... बुलेट पर आ जाओ। तुझे गए पूरे 24 घंटे हो गए हैं। मेरे बच्चे, तूने रोटी भी नहीं खाई है।' परिजनों के मुताबिक नईम अपने घर से रोज की तरह अपनी मिठाई की दुकान पर गए थे, फिर शव वापस आया। बदहवास मां कहती हैं कि यह कैसा कारोबार हो गया बेटे, तूने अब तक दुकान बंद नहीं की। मृतक के भाई तसलीम ने बताया कि नईम के तीन बच्चे हैं, जिनमें दो बेटे व एक बेटी है। तीनों की उम्र आठ साल से कम है।

अम्मी से पूछ रही आठ साल की सहर... अब्बू कब आएंगे

मोहल्ला हयातनगर निवासी रोमान (50) कपड़ों की फेरी लगाने का काम करते थे। परिजनों ने बताया कि रोज की तरह सुबह आठ बजे वह फेरी लगाने घर से निकले थे। जामा मस्जिद के पास मोहल्ला कोट पूर्वी में उनकी ससुराल है। दोपहर 12 बजे वहां से फोन आया कि रोमान अब नहीं रहे। उनके छोटे भाई नोमान व रिजवान बदहवास हालत में वहां पहुंचे। नोमान ने बताया कि भाई के चेहरे पर चोट लगी थी, जैसे वह गिर गए हों। परिजनों को आशंका है कि भगदड़ में वह गिर गए और चोटिल हो गए। किसी ने उन्हें उठाकर उनकी ससुराल तक पहुंचाया, तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। नोमान ने बताया कि रोमान के तीन बच्चे हैं। बड़ा बेटा अदनान 22 वर्ष का है, जो मजदूरी करता है। दो बेटे उजैर व हस्सान भी हैं। सबसे छोटी बेटी सहर आठ साल की है। वह अपनी मां से बार–बार रोकर पूछ रही है कि अब्बू कब आएंगे। परिजनों ने रात में ही उन्हें सुपुर्द–ए–खाक कर दिया।

15 साल पहले पति खोया अब जवान बेटे की मौत

25 गज के घर में रिश्तेदारों की की भीड़ है, लेकिन नफीसा की निगाहें अपने लाल अयान को ही ढूंढ रही हैं। 15 साल पहले पति को खोने का गम जैसे–तैसे हल्का हुआ था कि अब बेटे की मौत से वह फिर टूट गईं। बवाल में अपना 17 साल का बेटा खोने वाली नफीसा का दर्द शायद ही कोई समझ सके। कोट गर्वी के मोहल्ला अब्बासी निवासी अयान के चचेरे भाई आकिब ने बताया कि अयान के पिता रिक्शा चलाते थे। बीमारी के चलते करीब 15 साल पहले उनका इंतकाल हो गया था। उस वक्त अयान करीब दो साल का था। अयान अपने भाई कामिल के साथ होटल पर रोटी बनाने का काम करता था। अयान की बहन रेशमा और नाजिया की शादी हो चुकी है। रविवार सुबह वह घर पर ही था। पता नहीं कब जामा मस्जिद पहुंच गया। फिर उसके जख्मी होने की सूचना आई। इलाज के दौरान मुरादाबाद के निजी अस्पताल में अयान की मौत हो गई।

मुरादाबाद तक लगाई दौड़ पर नहीं बची भाई की जान

भाई बिलाल (22) को बचाने के लिए मोहम्मद अलीम और मोहम्मद सलमान ने संभल से मुरादाबाद तक की दौड़ लगाई, लेकिन जान नहीं बचा सके। इस बात का दोनों भाइयों को जिंदगीभर मलाल रहेगा। सरायतरीन के झालीजामन वाली गली के रहने वाले अलीम और सलमान ने बताया कि पिता हनीफ फल का ठेला लगाते हैं। परिवार की माली हालत सुधारने के लिए बिलाल ने सुपर मार्केट में लेडीज कपड़ों की दुकान खोली थी। रविवार को बिलाल ने दिल्ली से माल मंगाया था। सुबह ही माल लेकर वह दुकान पहुंचा था। तभी जामा मस्जिद के पास बवाल शुरू हो गया। कुछ ही देर बाद भाई के घायल होने की खबर आई। भाई को लेकर निजी अस्पताल पहुंचे। हालत बिगड़ने लगी तो बिना देरी किए मुरादाबाद के निजी अस्पताल पहुंच गए। वहां डॉक्टर के नहीं मिलने पर दूसरे अस्पताल पहुंचे, जहां उसकी मौत हो गई। चार भाई–दो बहनों में बिलाल तीसरे नंबर का था।

सपा सांसद और विधायक के बेटे समेत 2500 पर एफआईआर

संभल में बवाल के दूसरे दिन सोमवार को शांति के बीच पुलिस ने सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क, विधायक इकबाल महमूद के बेटे सुहेल इकबाल समेत 2500 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की। बर्क और सुहेल पर बलवा कराने की साजिश का आरोप है। वहीं तीन महिलाओं समेत 27 आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। वहीं जामा मस्जिद के सदर जफर अली एडवोकेट को पुलिस ने पूछताछ के लिए बुलाया। सीओ अनुज चौधरी, एसपी के पीआरओ संदीप कुमार, दरोगा दीपक राठी और शाह फैसल की तहरीर पर संभल कोतवाली में पांच और नखासा थाने में दो मुकदमे दर्ज किए गए। इसमें 2500 लोगों को आरोपी बनाया गया है।

तीन महिलाओं समेत 27 आरोपियों को भेजा जेल

उधर, गिरफ्तार तीन महिलाओं समेत 27 आरोपियों को लेकर मेडिकल परीक्षण कराने पुलिस संभल के सरकारी अस्पताल पहुंची। अस्पताल के बाहर लोगों की भीड़ जुट गई। पुलिस ने आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के बाद मुरादाबाद जेल भेज दिया। बवाल के दूसरे दिन प्रभावित मोहल्लों में सन्नाटा पसरा रहा। दिनभर पुलिस की गाड़ियां दौड़ती रहीं। पुलिस–प्रशासन के अधिकारी लोगों से शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील करते रहे। उपद्रवियों की पहचान के लिए पुलिस सीसीटीवी फुटेज और ड्रोन से लिए गए फोटो व वीडियो खंगाल रही है। बवाल में जान गंवाने वाले नईम, बिलाल और कैफ के शवों को पोस्टमार्टम के बाद रविवार देर शाम ही पुलिस ने अलग–अलग कब्रिस्तानों में सुपुर्द–ए–खाक करा दिया था। रोमान के परिजनों ने बिना पोस्टमार्टम ही शव को दफन कर दिया। बता दें कि रविवार की सुबह कोर्ट कमिश्नर जामा मस्जिद का सर्वे करने के लिए पहुंचे तो मस्जिद के आसपास भीड़ एकत्र हो गई थी। सुबह करीब साढ़े आठ बजे पुलिस ने भीड़ को हटाने का प्रयास किया तो बवाल शुरू हो गया था। इसमें पांच लोगों की जान चली गई थी।

उन्नाव में गंगा में गिरा पुल

4 साल से बंद था, 150 साल पहले अंग्रेजों ने बनाया था

उन्नाव,संवाददाता । ब्रिटिश कालीन जर्जर पुल मंगलवार सुबह गंगा नदी में समा गया। 150 साल पुराने इस पुल पर 4 साल से यातायात बंद था। प्रशासन ने दीवारें बना दी थीं, ताकि कोई इस क्षेत्र में प्रवेश न कर सके। यह पुल कानपुर और उन्नाव जिले के बीच गंगा नदी पर बना था।

पुल का निर्माण 1874 में हुआ था। ब्रिटिश शासन के दौरान अवध एंड रूहेलखंड लिमिटेड कंपनी ने बनाया था। वर्ष 2021 में पुल के 2, 10, 17 और 22 नंबर की कोठियों में दरारें आ गई थीं, इसके बाद इसे यातायात के लिए बंद कर दिया गया था। पुल के दोनों तरफ दीवारें बनाई गई थीं, ताकि लोग इस पर न जा सकें।

> पुल का निर्माण 1874 में हुआ था। ब्रिटिश शासन के दौरान अवध एंड रूहेलखंड लिमिटेड कंपनी ने बनाया था।

मेदान्ता ने यूपी की पहली 5जी एंबुलेंस सेवा का किया शुभारंभ

आपातकालीन चिकित्सा में स्थापित किए नए मानक

लखनऊ। मेदान्ता अस्पताल में प्रदेश की पहली 5जी एंबुलेंस सेवा का शुभारंभ हो गया है। सहायता के लिए 1068 पर कॉल करके इस सेवा का लाभ उठाया जा सकता है। मेदान्ता ने उत्तर प्रदेश की पहली 5जी सक्षम एम्बुलेंस लॉन्च की है। जो आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं में एक बड़ा कदम है। यह तकनीक रियल–टाइम डेटा ट्रांसफर और हाई–स्पीड कनेक्टिविटी के साथ मरीजों को बेहतर देखभाल प्रदान करती है। यह सुविधा मेदान्ता की 5वीं वर्षगांठ के अवसर पर शुरू की गई है। आपातकालीन सहायता के लिए इसे 1068 पर कॉल करके कभी भी इस सेवा का लाभ उठाया जा सकता है।

5जी तकनीक के साथ आपातकालीन सेवाओं में क्रांति

तत्काल डेटा ट्रांसमिशनरू एम्बुलेंस से ईसीजी, हार्ट रेट और ऑक्सीजन सैचुरेशन जैसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य डेटा रियल टाइम में अस्पताल भेजे जा सकते हैं, जिससे मरीज के आने से पहले ही अस्पताल में इलाज के लिए आवश्यक तैयारी शुरू हो जाती है। रियल–टाइम एक्सपर्ट सहायतारू वीडियो सपोर्ट के माध्यम से पैरामेडिक्स को लगातार विशेषज्ञ डॉक्टरों का मार्गदर्शन मिलता है, जिससे सफर के दौरान ही मरीज की उच्च गुणवत्ता की देखभाल संभव होती है।

लगातार कनेक्टिविटीः एम्बुलेंस और अस्पताल के बीच सुरक्षित और निरंतर कनेक्टिविटी सुनिश्चित होती है, जिससे मरीज के देखभाल में कोई रुकावट नहीं आने पाती।

समय पर निदान और उपचारः स्वास्थ्य डेटा के त्वरित ट्रांसमिशन से अस्पताल पहुंचने से पहले ही इलाज शुरू हो जाता है, जिससे परिणाम बेहतर होते हैं। मेदान्ता लखनऊ के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. राकेश कपूर ने कहा, ष्5जी एम्बुलेंस उत्तर प्रदेश के लिए एक क्रांतिकारी पहल है। यह मेदान्ता की स्वास्थ्य सेवाओं को तकनीक के साथ जोड़ने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमारा लक्ष्य है कि आपातकालीन परिस्थितियों में मरीज के इलाज के लिए हर सेकंड का सही उपयोग हो।

आपातकालीन और ट्रॉमा केयर के एसोसिएट डायरेक्टर और प्रमुख, डॉ. लोकेन्द्र गुप्ता ने कहा, ष्यह सेवा मेदान्ता की उस सोच को दर्शाती है, जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सा को समुदाय तक पहुंचने का प्रयास है। 5जी एम्बुलेंस पैरामेडिक्स को रियल–टाइम सपोर्ट देकर अस्पताल पहुंचने से पहले ही जीवनरक्षक उपाय करने में सक्षम बनाती है। टोल फ्री नंबर 1068 पर कॉल कर कभी भी उपयोग किया जा सकता है। मेदान्ता की 5वीं वर्षगांठ अत्याधुनिक सेवाओं के साथ स्वास्थ्य सेवाओं को आगे बढ़ाने की उसकी यात्रा का प्रतीक है। यह इस बात का परिचायक है कि मेदान्ता मरीजों की जरूरतों के मुताबिक आधुनिक तकनीक के उपयोग में सबसे आगे है।

हवा इस कदर हुई खराब...

कई जिलों में स्कूल बंद, स्थगित करने पड़े बच्चों के टेस्ट

लखनऊ। नैट पर भी प्रदूषण की छाया का असर रहा। इस कारण एनसीआर में बच्चों के टेस्ट स्थगित कर दिए गए हैं। मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़ समेत कई जिलों में टेस्ट बाद में होगा। हालांकि लखनऊ, अयोध्या, प्रयागराज, कानपुर, बरेली मंडल में टेस्ट शुरू हो गए हैं। यूपी लखनऊ में परिषदीय विद्यालयों में छात्रों के पठन–पाठन के आकलन के लिए सोमवार से निपुण एसेसमेंट टेस्ट (नैट) की शुरुआत हुई है। वहीं एनसीआर में प्रदूषण के कारण मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, बागपत, शामली, मुजफ्फरनगर में स्कूल बंद हैं। इससे इन जिलों में नैट स्थगित कर दिया गया है। लखनऊ, अयोध्या, प्रयागराज, कानपुर व बरेली मंडल के जिलों में टेस्ट की शुरुआत हुई। पहले दिन कक्षा एक से तीन के विद्यार्थियों का टेस्ट हुआ। पहले दिन टेस्ट में लगभग 80 फीसदी बच्चे शामिल हुए। पहला दिन होने के कारण विद्यार्थियों की सूचना भरने व ओएमआर शीट को लेकर थोड़ी दिक्कत आई।

परख एप पर सिंक कराने में दिक्कत आई

कुछ जगह पर पैकेट में ओएमआर शीट कम मिली और डाटा भी परख एप पर सिंक कराने में दिक्कत आई। सहारनपुर मंडल में टेस्ट नहीं हुआ। इसी क्रम में 26 नवंबर को इन्हीं मंडल में कक्षा चार से आठ के विद्यार्थियों का टेस्ट होगा।

टेस्ट की समय सारिणी बाद में जारी की जाएगी

27 व 28 नवंबर को गोरखपुर, वाराणसी, चित्रकूट, अलीगढ़ व झांसी मंडल में टेस्ट होगा। इस दिन मेरठ मंडल में प्रस्तावित टेस्ट स्थगित रहेगा। महानिदेशक स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा ने कहा है कि स्थगित टेस्ट की समय सारिणी बाद में जारी की जाएगी।

स्वाइन फ्लू की दस्तक, डेंगू चिकनगुनिया के रोगी भी बढ़े

रायबरेली। डेंगू व चिकनगुनिया के बाद अब जिले में स्वाइन फ्लू की दस्तक ने परेशानी बढ़ा दी है। लखनऊ के एक निजी अस्पताल में हुई जांच में जिले का पहला स्वाइन फ्लू पीड़ित मरीज मिला है। इसके साथ ही डेंगू के पांच और चिकनगुनिया पीड़ित एक मरीज को भी बीते 24 घंटे में इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

प्रयोगशाला की जांच रिपोर्ट में जिले के भर्ती एक मरीज में स्वाइन फ्लू की पुष्टि के बाद स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड में आ गया है। चिह्नित मरीज के घर जांच के लिए टीम भेजकर परिवार के बाकी सदस्यों के साथ ही आसपास रहने वाले 65 लोगों के रक्त नमूने लेकर जांच के लिए भेजे गए हैं। स्वाइन फ्लू के चपेट में आए मरीज के घर के लोगों को बचाव के लिए दवा भी बांटी गई। जांच के दौरान स्वाइन फ्लू की पुष्टि वाले मरीज के साथ ही परिवार के बाकी लोग स्वस्थ मिले।

सांस लेने की समस्या बढ़ने के बाद शहर के दक्षिणी जहानाबाद में रहने वाले 68 वर्षीय बुजुर्ग को लखनऊ के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वहां कराई गई जांच में मरीज में स्वाइन फ्लू की पुष्टि हुई है। जांच रिपोर्ट आने के बाद गत रविवार को डॉ. ऋषि बागची और मो. नकवी की टीम ने मरीज के घर पहुंचकर परिवार के लोगों की जांच की। जांच में सभी लोग स्वस्थ मिले। उधर, जिला अस्पताल की प्रयोगशाला की जांच में बेलाभेला क्षेत्र के मठिया गांव निवासी सत्येंद्र श्रीवास्तव (45) चिकनगुनिया संक्रमित मिले। टीम ने मरीज के घर पहुंचकर जांच की। इसके अलावा जिला अस्पताल की प्रयोगशाला में शहर के सम्राट नगर निवासी ननका देवी (62), पुलिस लाइन चौराहा निवासी शिप्रा (45), खाली सहाट निवासी अनुष्का (10), खसपरी निवासी करन (23), सूबेदार का पुरवा धूता निवासी क्षमा (41) में डेंगू की पुष्टि हुई है। डेंगू की रिपोर्ट आने के बाद मलेरिया निरीक्षक मो. आतिफ की टीम ने मरीजों के घर पहुंचकर परिवार के लोगों के ब्लड के सैंपल लिए।

स्वाइन फ्लू के लक्षण सामान्य फ्लू की तरह

जिला अस्पताल के चिकित्सक डॉ. गौरव त्रिवेदी ने बताया कि स्वाइन फ्लू के लक्षण सामान्य फ्लू की तरह दिखाई देते हैं। इसमें व्यक्ति को बुखार, गले में खराश, खांसी, सिर दर्द, शरीर में दर्द, ठंड लगना और थकान महसूस होती है। स्वाइन फ्लू से ग्रसित कई लोगों को उल्टी और दस्त की भी शिकायत होती है।

छोटे बच्चों में इसके लक्षण थोड़े अलग हो सकते हैं। अगर बच्चे को सांस लेने में तकलीफ है, दाने के साथ बुखार और भ्रम की स्थिति बन रही है तो तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए। एचएएन1 नाम का वायरस स्वाइन फ्लू जैसी खतरनाक बीमारी का कारण बनता है। यह एक श्वसन

रोग है, जो सामान्य फ्लू की तरह संक्रामक है।

संक्रमण से बचने के लिए साफ सफाई जरूरी

जिला अस्पताल के चिकित्सक डॉ. सलीम ने बताया कि महज घर व आसपास साफ सफाई कर स्वाइन फ्लू के संक्रमण से बचा जा सकता है। इसके लिए व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ ही मच्छरों से बचने के साथ कच्ची सब्जी व फल को धो कर ही खाना चाहिए। समस्या होने पर तत्काल अस्पताल पहुंचकर चिकित्सीय सलाह लेना चाहिए।

जिले के एक मरीज की जांच में स्वाइन फ्लू की पुष्टि हुई है। हालांकि मरीज के साथ ही परिवार के अन्य लोग मेडिकल टीम की जांच में पूरी तरह स्वस्थ मिले हैं। डेंगू व चिकनगुनिया के मरीजों का भी बेहतर इलाज किया जा रहा है। बचने के लिए एहतियात बरतने की जरूरत है।

डॉ. ऋषी बागची, संक्रामक रोग विशेषज्ञ

दबंगों ने दूल्हे के साथ की मारपीट, चलें ईंट-पत्थर चालक ने दिखाई सूझबूझ

आजमगढ़ के बरदह थाना क्षेत्र के शादीपुर गांव में बीती रात आई बारात में दबंगों ने दूल्हे के साथ मारपीट की और उसके वाहन पर भी पथराव कर दिया। मामले के बाद पूरी बारात बिना शादी के ही रात में लौट रही थी कि सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस पहुंच गई। दोनों पक्षों के बीच बातचीत करवाकर शादी की रस्में निभाई गईं।

चार इंजीनियरों पर केस, जांच में उजागर हुई बड़ी लापरवाही

अधूरे पुल से गिरी थी कार- तीन लोगों की गई जान

बदायूं संवाददाता । बरेली–बदायूं की सीमा पर अधूरे पुल से कार नीचे गिर गई थी। इस हादसे में तीन युवकों की जान चली गई। इस मामले में बदायूं के नायब तहसीलदार ने पीडब्ल्यूडी पर लापरवाही का आरोप लगाकर चार इंजीनियरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। गूगल मैप के क्षेत्रीय अधिकारी के खिलाफ भी शिकायत की गई है।

बदायूं जिले के समरेर को बरेली के फरीदपुर से जोड़ने वाले अधूरे पुल से रविवार तड़के कार समेत नीचे गिरे तीन युवकों की मौत के मामले में पीडब्ल्यूडी के दो सहायक व दो अवर अभियंताओं समेत कई अज्ञात पर रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। बदायूं के दातागंज कोतवाली में दर्ज कराई गई रिपोर्ट में नामजद अभियंताओं का निलंबन तय माना जा रहा है। वहीं, गलत रास्ता दिखाने के लिए गूगल मैप के क्षेत्रीय प्रबंधक के खिलाफ भी शिकायत की गई है। हालांकि, पुलिस ने मुकदमे में गूगल या उसके किसी अधिकारी को नामजद नहीं किया है। विवेचना में कुछ नाम बढ़ाए जा सकते हैं। दातागंज के नायब तहसीलदार छविराम ने कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि पुल का पहुंच मार्ग पिछले साल सितंबर में बह गया था। बावजूद, पीडब्ल्यूडी ने मजबूत अवरोधक, बैरिकेडिंग व सांकेतिक बोर्ड नहीं लगवाया।

लखनऊ में किसान को लेखपाल ने पीटा

कहा–सारी नेतागिरी निकाल दूंगा, विवादित जमीन की नपाई करने गए थे अधिकारी

लखनऊ। लखनऊ में जमीन की नपाई करने पहुंचे लेखपाल ने किसान नेता को पीट दिया। गालियां दीं और मोबाइल छीन लिया। लेखपाल ने कहा– मार–मार कर सारी नेता गिरी निकाल दूंगा। घटना सोमवार दोपहर की है। मामला इंटौजा थाने पहुंचा। पुलिस पीड़ित से तहरीर लेकर मामले की जांच कर रही है। इधर, किसान नेता दीपक शुक्ला उर्फ तिरंगा महाराज ने लेखपाल पर जमीन की गलत नपाई करने का आरोप लगाया है। आरोपी तहसीलदार (मलिहाबाद तहसील) तुषार सिंह का कहना है कि किसान नेता मुझे नौकरी से निकलवाने की धमकी देता है। परेशान करता है। बीकेटी तहसील के इटौंजा थाना क्षेत्र स्थित नीलांश वाटर पार्क की जमीन को लेकर काफी लम्बे समय से विवाद चल रहा है। किसानों का

आरोप है कि वॉटर पार्क मालिक ने किसानों और सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा कर रखा है। इसको लेकर पिछले 85 दिनों से किसान प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी को लेकर बीकेटी और मलिहाबाद तहसील के अधिकारी और लेखपाल जमीन की नपाई करने पहुंचे थे। इस दौरान उनका स्थानीय किसानों से विवाद हो गया।

किसानों की जमीन पर कब्जा किया

किसान नेता दीपक शुक्ला उर्फ तिरंगा ने बताया कि नीलांश वॉटर पार्क में अकड़रिया कला गाँव में नदी का गाटा संख्या 1660 और मलिहाबाद तहसील में नदी गाटा संख्या 00 645, गाटा संख्या 0995, गाटा संख्या 996, गाटा संख्या 1041 की जमीन और कई अन्य जमीनों के गाटा संख्या नंबर सही से नहीं नाप पा रहे हैं। तिरंगा का आरोप है कि इन जमीनों पर नीलांश वॉटर पार्क ने अवैध कब्जा कर रखा है, जिसका स्थानीय किसान विरोध कर रहे हैं। बीकेटी सतीश चन्द्र त्रिपाठी ने बताया कि नीलांश वॉटर पार्क में जमीन की नपाई को लेकर मलिहाबाद और बीकेटी तहसील के तहसीलदार और राजस्व टीम मौके पर नपाई करने पहुंची थी। दीपक शुक्ला उर्फ तिरंगा महाराज किसानों के साथ नीलांश वाटर पार्क पहुंचे थे। जहां नपाई कर रहे मलिहाबाद तहसील के लेखपाल तुषार सिंह से मामूली कहासुनी हो गई।

प्रदर्शन बंद नहीं करेंगे

मौके किसान यूनियन के नेता निर्मल शुक्ला और अंतरराष्ट्रीय युवा हिंदू वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल सिंह अपने कार्यकर्ताओं के साथ नपाई में मौजूद थे। अनिल सिंह ने कहा– बड़ा घोटाला होने से सही से नपाई नहीं की गई है। मलिहाबाद के लेखपालों ने फीता तक जमीन पर रखना मुनासिब नहीं समझा, जिसके कारण किसानों को न्याय नहीं मिल पाया है।

दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने गुरुवार को सांसद पद की शपथ ली। प्रियंका गांधी ने संविधान की प्रति हाथ में लेकर शपथ ली। जवाहर लाल नेहरू और विजयलक्ष्मी पंडित के बाद पहली बार नेहरू–गांधी परिवार के भाई–बहन की एक और जोड़ी सदन में नजर आएगी। प्रियंका गांधी ने सांसद के रूप में शपथ ले ली है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने उन्हें शपथ दिलाई। इसके साथ ही देश की संसद में गांधी परिवार के एक और सदस्य का प्रवेश हो गया है। प्रियंका गांधी नेहरू परिवार की 16वीं सदस्य हैं जो लोकसभा के लिए निर्वाचित हुई हैं। देश के संसदीय इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ जब लोकसभा में गांधी परिवार का कम से कम एक सदस्य न पहुंचा हो। ऐसे भी मौके आए हैं जब गांधी–नेहरू परिवार से जुड़े 5–5 सदस्य लोकसभा में एक साथ पहुंचे। मौजूदा लोकसभा में राहुल गांधी के बाद उनकी बहन प्रियंका भी संसद पहुंच गईं। राहुल और प्रियंका की मां सोनिया गांधी लंबे समय तक लोकसभा सांसद रही हैं। फिलहाल वो राजस्थान से राज्यसभा की सांसद हैं। ऐसा पहली बार होगा जब गांधी परिवार मां और उनके दो बच्चे एक साथ सांसद होंगे। पहली लोकसभा से लेकर अब तक किस लोकसभा में नेहरू–गांधी परिवार के कौन से चेहरे पहुंचे? किस लोकसभा में इस परिवार का सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व रहा? कांग्रेस के अलावा किन दूसरे दलों से नेहरू–गांधी परिवार के लोग चुने गए? परिवार का कौन सा चेहरा था जिसने कांग्रेस उम्मीदवार को हराकर संसद की सीढ़ियां चढ़ीं? आइये इन सभी सवालों के जवाब जानते हैं।

पहली लोकसभा में कितने चेहरों का रिश्ता नेहरू–गांधी परिवार से था ?

सबसे पहले बात पहली लोकसभा की कर लेते हैं। साल 1951–52 में देश के पहले लोकसभा चुनाव हुए। इस चुनाव में 400 लोकसभा सीटों से कुल 489 सांसद चुनकर संसद पहुंचे। जैसा की आप जानते हैं कि उस दौर में कई लोकसभा सीटें ऐसी थीं जहां से दो–दो सांसद चुने जाते थे। 1951 के इस लोकसभा चुनाव में एक सीट ऐसी भी थी जहां से तीन सासंद चुनकर लोकसभा पहुंचे थे। इन 489 सांसदों में से पांच सांसद ऐसे थे जिनका रिश्ता नेहरू–गांधी परिवार से थे। खुद जवाहर लाल नेहरू जो इलाहाबाद जिला (पूर्व) सह जौनपुर जिला (पश्चिम) लोकसभा सीट से जीतकर देश के प्रधानमंत्री बने। नेहरू के साथ इस सीट से सांसद बनने वाले दूसरे चेहरे कांग्रेस के ही मसुरियादीन थे।

जवाहर लाल नेहरू के दामाद और इंदिरा गांधी के पति फिरोज गांधी प्रतापगढ़ जिला (पश्चिम) सह रायबरेली जिला (पूर्व) लोकसभा सीट से जीते। इसी सीट से कांग्रेस के बृजनाथ कुरील भी जीते थे क्योंकि यह सीट ऐसी थी जहां से दो सांसद चुने गए थे।

सीतापुर जिला सह खीरी जिला (पश्चिम) से जीतीं उमा नेहरू भी इसी परिवार से जुड़ी थीं। दरअसल, उमा के पति श्यामलाल नेहरू पंडित जवाहर लाल नेहरू के चचेरे भाई थे। श्यामलाल नेहरू के पिता नंदलाल नेहरू जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू के बड़े भाई थे। पहले लोकसभा चुनाव में नेहरू परिवार से जीतने वाले चौथे चेहरे का नाम था विजयलक्ष्मी पंडित, विजयलक्ष्मी पंडित नेहरू की सगी बहन थीं। विजयलक्ष्मी को लखनऊ जिला मध्य सीट से कांग्रेस के टिकट पर जीत मिली थी।

1953 में विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष चुनी गईं। विजयलक्ष्मी इस पद के लिए चुनी गई पहली महिला थीं। इसके बाद उन्होंने अपनी लोकसभा सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। उनके इस्तीफे के बाद लखनऊ जिला मध्य सीट पर उप चुनाव हुए। इस उपचुनाव में नेहरू परिवार से संबंध रखने वालीं श्योराजवती नेहरू जीतीं थीं। श्योराजवती की शादी डॉक्टर किशन लाल नेहरू से हुई थी। किशनलाल नेहरू के पिता का नाम नंदलाल नेहरू था। यानी, श्योराजवती प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के चचेरे भाई की पत्नी थीं। इस तरह पहले लोकसभा में नेहरू–गांधी परिवार से कुल पांच लोग लोकसभा पहुंचे। हालांकि, एक वक्त में इनकी कुल संख्या चार ही रही।

दूसरी लोकसभा में घट गई नेहरू–गांधी परिवार के सदस्यों की संख्या

1957 में जब देश के दूसरे लोकसभा चुनाव हुए तो 403 लोकसभा सीटों से कुल 494 सांसद चुनकर आए। इस चुनाव में नए सिरे से परिसीमन हुआ। सीटों के नाम बदले गए। जहां तक नेहरू गांधी परिवार की बात है तो इस चुनाव में इस परिवार से संबध रखने वाले तीन चेहरे जीतकर लोकसभा पहुंचे। खुद जवाहर लाल नेहरू फूलपुर लोकसभा सीट से जीते, उमा नेहरू सीतपुर लोकसभा सीट से जीतीं तो फिरोजगांधी रायबरेली सीट से जीतकर लोकसभा पहुंचे। हालांकि फिरोज गांधी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सके। 8 सितंबर 1960 को महज 47 साल की उम्र में उनका निधन हो गया।

जब पहली बार लोकसभा में नेहरू परिवार से सिर्फ एक सदस्य

1962 में 494 सीटों के लिए हुए तीसरी लोकसभा चुनाव में जवाहर लाल नेहरू अपने परिवार से संसद पहुंचने वाले अकेले शख्स थे। हालांकि, 27 मई 1964 को प्रधानमंत्री नेहरू का निधन हो गया। उनके निधन के चलते फूलपुर लोकसभा सीट खाली हो गई। इस सीट पर उपचुनाव हुए तो उनकी बहन विजयलक्ष्मी पंडित यहां से जीतकर लोकसभा पहुंची और लोकसभा में नेहरू–गांधी परिवार का प्रतिनिधित्व जारी रहा। चौथी लोकसभारू वो चुनाव जब गांधी परिवार से जुड़े शख्स ने कांग्रेस को हराया साल 1967 में देश के चौथे लोकसभा चुनाव हुए। ये पहले चुनाव थे जब कांग्रेस का नेतृत्व जवाहर लाल नेहरू नहीं कर रहे थे। नेहरू के निधन के बाद उनकी बेटी इंदिरा गांधी राज्यसभा सांसद बन चुकी थीं। 1967 के चुनाव में इंदिरा ने पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा। इस चुनाव में इंदिरा को जीत मिली। इंदिरा उसी रायबरेली से चुनकर आईं जहां से कभी उनके पति फिरोज गांधी चुनाव जीतते थे। इंदिरा की बुआ विजयलक्ष्मी पंडित एक बार फिर फूलपुर लोकसभा सीट से जीतीं।

इस चुनाव में गांधी परिवार से जुड़ा एक और सदस्य भी जीता। वो भी निर्दलीय। दरअसल, 1967 के चुनाव में लखनऊ सीट कांग्रेस के हाथ से निकल गई। इस चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार आनंद नारायण मुल्ला ने कांग्रेस के वीआर मोहन को 20,972 मतों से हरा दिया। राजनीति में आने से पहले आनंद नारायण एक वकील और इलाहाबाद हाईकोर्ट में जज की जिम्मेदारी निभा चुके थे। आनंद नारायण मुल्ला के पिता पंडित जगत नारायण मुल्ला थे। कश्मीरी पंडित परिवार से ताल्कुल रखने वाले पंडित जगत नारायण मुल्ला आजादी से पहले उत्तर प्रदेश जिसे उस वक्त यूनाइटेड प्रोविंस कहा जाता था के एक प्रमुख वकील थे। उन्होंने कई मामलों में उस वक्त की अंग्रेज सरकार का भी पक्ष रखा था। मशहूर काकोरी कांड में भी जगत नारायण मुल्ला अंग्रेजों के वकील थे। मोती लाल नेहरू के करीबी जगत नारायण की बेटी श्योराजवती की शादी किशन लाल नेहरू से हुई थी। वही, श्योराजवती जो 1954 के उप–चुनाव में कांग्रेस के टिकट जीतीं थीं। उन्ही श्योराजवती के भाई आनंद नारायण लखनऊ सीट पर कांग्रेस की पहली हार का कारण बने थे। आनंद नारायण उस दौर के चर्चित उर्दू कवि थे। उन्होंने कई किताबें लिखीं थीं। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित आनंद नारायण बाद में कांग्रेस के टिकट पर राज्यसभा भी गए।

गांधी–नेहरू परिवार से ताल्लुक रखने वाली शीला जीतीं

1971 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर इंदिरा गांधी रायबरेली से जीतीं। वहीं, लखनऊ सीट से कांग्रेस ने गांधी–नेहरू परिवार से संबंध रखने वाली शीला कौल जीतकर लोकसभा पहुंची। शीला कौल का नेहरू–गांधी परिवार से रिश्ता भी जान लीजिए। दरअसल, शीला कौल के पति का नाम कैलाश नाथ कौल था। कैलाश नाथ कौल कमला नेहरू के सगे भाई थे। यानी, शीला कौल इंदिरा गांधी की मामी थीं। ये वही शीला कौल थीं जो बाद में रायबरेली से भी जीतकर लोकसभा पहुंचीं।

वो चुनाव जिसमें नेहरू–गांधी परिवार का कोई सदस्य नहीं जीता

आपतकाल के बाद 1977 में देश में छठे आम चुनाव हुए। इस चुनाव में इंदिरा गांधी को रायबरेली तो उनके बड़े बेटे संजय गांधी को अपने पहले ही चुनाव में अमेठी सीट से हार का सामना करना पड़ा। ये पहला मौका था जब नेहरू–गांधी परिवार को कोई सदस्य संसद नहीं पहुंचा था। हालांकि, ज्यादा वक्त तक ऐसा नहीं रह सका। 1978 में कर्नाटक के चिकमंगूलर से जीतकर इंदिरा फिर से लोकसभा पहुंच गईं। ये पहला मौका था जब नेहरू–गांधी परिवार का कोई सदस्य उत्तर प्रदेश के बाहर किसी अन्य राज्य से चुनाव जीतकर संसद पहुंचा। यहीं से दक्षिण भारत और नेहरू गांधी परिवार के साथ की शुरुआत हुई।

1980: पहली बार मां–बेटे की जोड़ी संसद पहुंची

साल 1980 के लोकसभा चुनाव में संजय गांधी एक बार फिर अमेठी से चुनाव लड़े। इस बार उन्हें जीत मिली। वहीं, उनकी मां इंदिरा गांधी रायबरेली और आंध्र प्रदेश के मेंडक से चुनाव लड़ीं और दोनों जगह जीतीं। पहली बार मां–बेटे की जोड़ी संसद पहुंची। चुनाव के बाद इंदिरा ने रायबरेली सीट छोड़ दी। यहां उप चुनाव हुए तो नेहरू परिवार से ही जुड़े अरुण नेहरू यहां से चुनाव लड़े और जीते। अरुण नेहरू उमा नेहरू के पोते थे। वही उमा नेहरू जो 1951 और 1957 में जीतकर लोकसभा पहुंची थीं। इसी तरह इंदिरा की मामी शीला कौल भी एक बार फिर लखनऊ से जीतने में सफल रही थीं। महज एक चुनाव बाद ही लोकसभा में नेहरू–गांधी परिवार के सदस्यों की संख्या बढ़कर चार हो गई थी। चुनाव नतीजों के चंद महीने बाद ही इंदिरा गांधी के बड़े बेटे संजय गांधी की विमान हादसे में मौत हो गई। संजय के निधन के बाद उनके छोटे भाई राजीव गांधी ने अमेठी सीट पर हुए उपचुनाव में जीत हासिल की और लोकसभा पहुंचे। इस हादसे चार साल बीते थे कि नेहरू–गांधी परिवार पर और बड़ा संकट आया। संकट कांग्रेस पर भी आया। पार्टी की सबसे बड़ी नेता और देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 31 अक्तूबर 1984 को हत्या हो गई। इंदिरा की हत्या के बाद हुए चुनाव में कांग्रेस ने प्रचंड जीत दर्ज की। राजीव अमेठी, अरुण नेहरू रायबरेली और शीला कौल लखनऊ लोकसभा सीट से जीतने में सफल रहीं।

1989: वोट चुनाव जब परिवार के दो चेहरे गैर–कांग्रेसी सांसद बने

1989 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा। राजीव के अपने भी दूसरे दल में चले गए। राजीव गांधी खुद अमेठी से जीते। वहीं, लखनऊ से जीतती रहीं इंदिरा गांधी की मामी शीला कौल रायबरेली से जीतकर लोकसभा पहुंची। 1980 में रायबरेली से जीते अरुण नेहरू इस चुनाव में कानपुर जिले की बिल्हौर सीट से जनता दल के टिकट पर जीतकर लोकसभा पहुंचे। वहीं, राजीव गांधी की भाभी और संजय गांधी की पत्नी मेनका गांधी भी जनता दल के टिकट पर पीलीभीत से जीतकर पहली बार लोकसभा पहुंचीं। मेनका 1984 में अमेठी से राजीव गांधी के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ चुकी थीं। तब उन्हें न सिर्फ हार का सामना करना पड़ा था, बल्कि उनकी जमानत तक जब्त हो गई थी।

1991: चुनाव के दौरान राजीव की हत्या, निधन के बाद आए नतीजे में भी जीते

1991 के लोकसभा चुनाव के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या हो गई। उस चुनाव में भी राजीव अमेठी सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार थे। उनके निधन के बाद जब नतीजे आए तो राजीव को अमेठी सीट से जीत मिली थी। उनके निधन की वजह से अमेठी में उपचुनाव कराना पड़ा। जिसमें उनके करीबी मित्र कैप्टन सतीश शर्मा जीते। वहीं, इंदिरा की मामी शीला कौल एक बार फिर से रायबरेली से लोकसभा पहुंचीं थी।

वो दौर जब लोकसभा में सिर्फ गैर कांग्रेसी गांधी

1996 और 1998 के लोकसभा चुनाव में नेहरू–गांधी परिवार की सिर्फ एक सदस्य ही लोकसभा पहुंचीं। ये सदस्य थीं मेनका गांधी। 1996 के लोकसभा चुनाव में मेनका जनता दल के टिकट पर पीलीभीत से जीतीं। इसी तरह 1998 में उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार के दौर पर पीलीभीत से ही जीत हासिल की।

सोनिया की चुनावी राजनीति में एंट्री

1999 के चुनाव में गांधी परिवार से एक और चेहरे का चुनावी राजनीति में प्रवेश हुआ। राजीव गांधी की पत्नी सोनिया गांधी ने अमेठी और कर्नाटक की बेल्लारी सीट से चुनाव लड़ा और जीता। बाद में उन्होंने बेल्लारी सीट छोड़ दी। वहीं, मेनका गांधी एक बार फिर निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर पीलीभीत से जीतने में सफल रहीं। 2004 में सोनिया के बेटे राहुल गांधी अमेठी, सोनिया रायबरेली से जीतकर लोकसभा पहुंचीं। वहीं, मेनका गांधी भाजपा के टिकट पर पीलीभीत से फिर जीतने में सफल रहीं। 2009 में हुए लोकसभा चुनाव में गांधी परिवार के एक और सदस्य ने लोकसभा में प्रवेश किया। वो सदस्य थे वरुण गांधी। इस तरह गांधी परिवार के मां–बेटे की दो जोड़ियां पहली बार लोकसभा पहुंचीं। राहुल और सोनिया कांग्रेस के टिकट पर तो वरुण और मेनका भाजपा के टिकट पर जीते। 2014 और 2019 में भी ये सिलसिला कायम रहा। 2024 के लोकसभा चुनाव में ये आंकड़ा चार से घटकर एक हो गया जब सिर्फ राहुल गांधी रायबरेली और वायनाड से जीतकर लोकसभा पहुंचे। अब वायनाड के उपचुनाव में जीत दर्ज करने वाली प्रियंका के लोकसभा सांसद के तौर पर शपथ लेने के साथ ही ये संख्या फिर से बढ़ गई। जवाहर लाल नेहरू और विजयलक्ष्मी पंडित के बाद पहली बार नेहरू–गांधी परिवार के भाई–बहन की एक और जोड़ी सदन में नजर आएगी।

मुम्बई–फुर्सत के पल

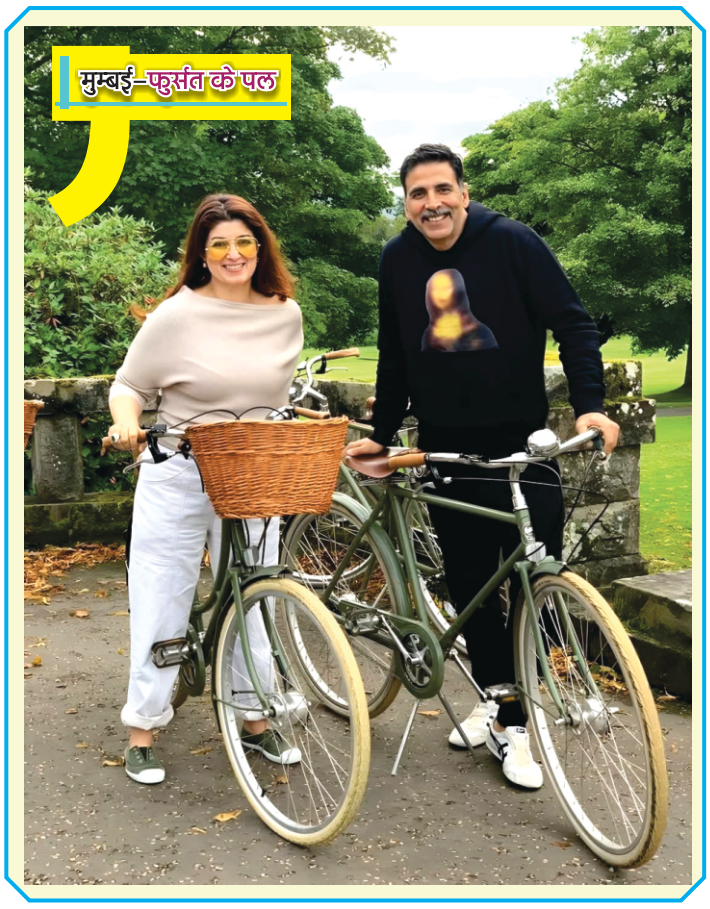

साल 2004 में आई थी ऐतराज सीक्वल में नजर नहीं आएंगी प्रियंका सुभाष घई ने शेयर किया अपडेट

इस समय बालीवुड में सीक्वल और री–रिलीज का दौर चल रहा है। बीते दिनों कई फिल्मों के सीक्वल अनाउंस किए गए। अब इस लिस्ट में एक और नाम जुड़ गया है। निर्माता सुभाष घई ने बताया था कि बहुत जल्द प्रियंका चोपड़ा अक्षय कुमार और करीना कपूर खान स्टारर ऐतराज का सीक्वल आने वाला है। अभी फिल्म की स्क्रिप्टिंग को लेकर काम चल रहा है ।

ये अच्छा नहीं हुआ !

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। साल 2004 में सुभाष घई एक फिल्म लेकर आए थे नाम था ऐतराज इस फिल्म में अक्षय कुमार, करीना कपूर और प्रियंका चोपड़ा ने काम किया था। फिल्म जबरदस्त हिट साबित हुई थी और पीसी ने फिल्म में नेगेटिव कैरेक्टर प्ले किया था। इस फिल्म के लिए उनकी काफी ज्यादा तारीफ भी हुई थी।

सुभाष घई ने दिया फिल्म को लेकर अपडेट

बीते दिनों निर्माता सुभाष घई ने कंफर्म किया था कि वो बहुत जल्द फिल्म का सीक्वल लेकर आने वाले हैं। इसके बाद से ये खबर आने लग गई कि दोबारा से इसके सीक्वल में प्रियंका चोपड़ा का जलवा देखने को मिलेगा। लेकिन अब प्रियंका चोपड़ा के फैंस के लिए एक बड़ी खबर है जिसे सुनकर शायद उन्हें थोड़ी निराशा भी हो सकती है।

खबर है कि प्रियंका चोपड़ा फिल्म के सीक्वल में नजर नहीं आएंगी। डीएनए में 55वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में बात करते हुए सुभाष घई ने कंफर्म किया कि ऐतराज 2 में प्रियंका चोपड़ा लीड एक्ट्रेस नहीं होंगी। इसके पीछे की वजह बताते हुए सुभाष ने कहा कि फिल्म को रिलीज हुए 20 साल हो गए हैं। इस वजह से उन्हें सीक्वल में अब नई जेनरेशनको लेना होगा। उन्होंने कहा– "ऐतराज को बने 20 साल हो गए। तो हमें आज के मार्डन कलाकार,नई पीढ़ी के एक्टर्स के साथ इस फिल्म को बनाना होगा। उन्होंने पुष्टि की कि उनका प्रोडक्शन हाउस खल नायक 2 और ऐतराज 2 पर काम कर रहा है।

अभी फिल्म की स्क्रिप्ट पर चल रहा काम

उन्होंने आगे कहा, अभी 3–4 महीने में जैसे स्टोरी और कास्ट लॉक हो जाएगी, हम सारी चीजें अनाउंस कर देंगे। साल 2004 में आई ऐतराज को सुभाष घई ने प्रोड्यूस किया था जबकि अब्बास मस्तान इसके निर्देशक थे। ओह माई गॉड के राइटर अमित राय इस फिल्म की स्क्रिप्ट तैयार कर रहे हैं। अमित राय के बारे में बात करते हुए सुभाष घई ने कहा, "मैंने ओह माई गॉड 2 के लेखक–निर्देशक अमित राय से एक शानदार स्क्रिप्ट सुनी है, जिसे अब ऐतराज 2 के लिए लिखा जा रहा है। हमें विभिन्न स्टूडियो से बहुत सारे कॉल आ रहे हैं कि वे फिल्म बनाना चाहते हैं। इस समय अमित के पास फिर से एक बड़ी हिट स्क्रिप्ट है। मुझे यह सचमुच बहुत पसंद आई।

'छठी मैया' में काम करना चैलेंजिंग नहीं रहा

मुम्बई। एक्ट्रेस देवोलीना भट्टाचार्जी मां बनने वाली हैं। इसलिए उन्होंने 'छठी मैया की बिटिया' से दूरी बना ली है। अब इस शो में छठी मैया के किरदार में स्नेहा वाघ नजर आएंगी। स्नेहा ने हाल ही में दैनिक भास्कर से बातचीत के दौरान बताया कि यह शो करने से पहले देवोलीना की परमिशन ली थी।

'छठी मैया की बिटिया' से जुड़ने का मकसद क्या है ?

इस शो से जुड़ने का कारण बिल्कुल स्पष्ट है। मुझे लाइफ में देवी की भूमिका करनी ही थी। यह शो मेरे पास आया, तब एक आशीर्वाद ही रहा, क्योंकि लाइफ में जो करना है, वह करने को मिल रहा है।

यह किरदार देवोलीना भट्टाचार्जी निभा रही थीं। क्या आपकी उनसे बात हुई ?

मुझे यह पता था कि देवोलीना मां बनने वाली हैं। इस बारे में उनसे पहले बात भी हो गई थी। लेकिन जब मुझे इस शो का ऑफर आया कि क्या 'छठी मैया की बिटिया' में काम करने के लिए मीटिंग करने आ सकती हैं। उस समय सबसे पहले देवोलीना को फोन करके पूछा कि मुझे ऐसा–ऐसा फोन आया है। क्या मैं यह शो कर सकती हूं। उन्होंने बड़े प्यार से बोला कि तुम्हें परमिशन लेने की जरूरत ही नहीं है। तुम बिंदास करो, कोई टेंशन लेने की जरूरत नहीं है।

चलते शो में किरदार जीवंत करने का चैलेंज किस तरह से पाती हैं ?

हर कलाकार का किसी भी किरदार को निभाने का अपना अलग तरीका होता है। मेरा तरीका थोड़ा अलग है। मेरे ऊपर न तो चौनल ने प्रेशर डाला और न ही प्रोड्क्शन हाउस ने प्रेशर डाला है। इस बात का कोई प्रेशर ही नहीं है कि इसको ऐसा ही करना है। उन्होंने मुझे पूरी छूट दी है कि आप अच्छे से कीजिए, जैसा आपका मन करता है, जैसा अंदर से फील होता है। मेरे लिए वह वाला चौलेंज नहीं है कि उन्होंने ऐसा किया, तब आपको ही ऐसा ही करना है। मैं अपने तरीके से चीजों को कर रही हूं, सो कोई ऐसा कुछ चौलेंज नहीं है। मेरे लिए इस तरह का किरदार निभाना चौलेंजिंग भी नहीं है।

इस किरदार को निभाने के लिए किस तरह की तैयारी करनी पड़ी ?

देखिए, छठी मैया का एकदम कंपोज्ड कैरेक्टर है। किरदार के लिए अंदरूनी तरीके से शांति लाने पर ज्यादा काम करना पड़ा, क्योंकि मैं थोड़े चंचल स्वभाव की हूं। एक्टिंग तो ठीक है, पर अपने अंदर एक ठहराव लाते हुए डायलॉग डिलीवरी जरूरी था। मैंने उस पर ज्यादा काम किया है। मैंने हाल ही में परेश रावल के साथ एक फिल्म देहरादून में शूट की है। फिल्म का नाम 'द ताज स्टोरी' है। यह फिल्म शायद अगले साल आ जाएगी। आएगी या थिएटर में आएगी, पता नहीं।

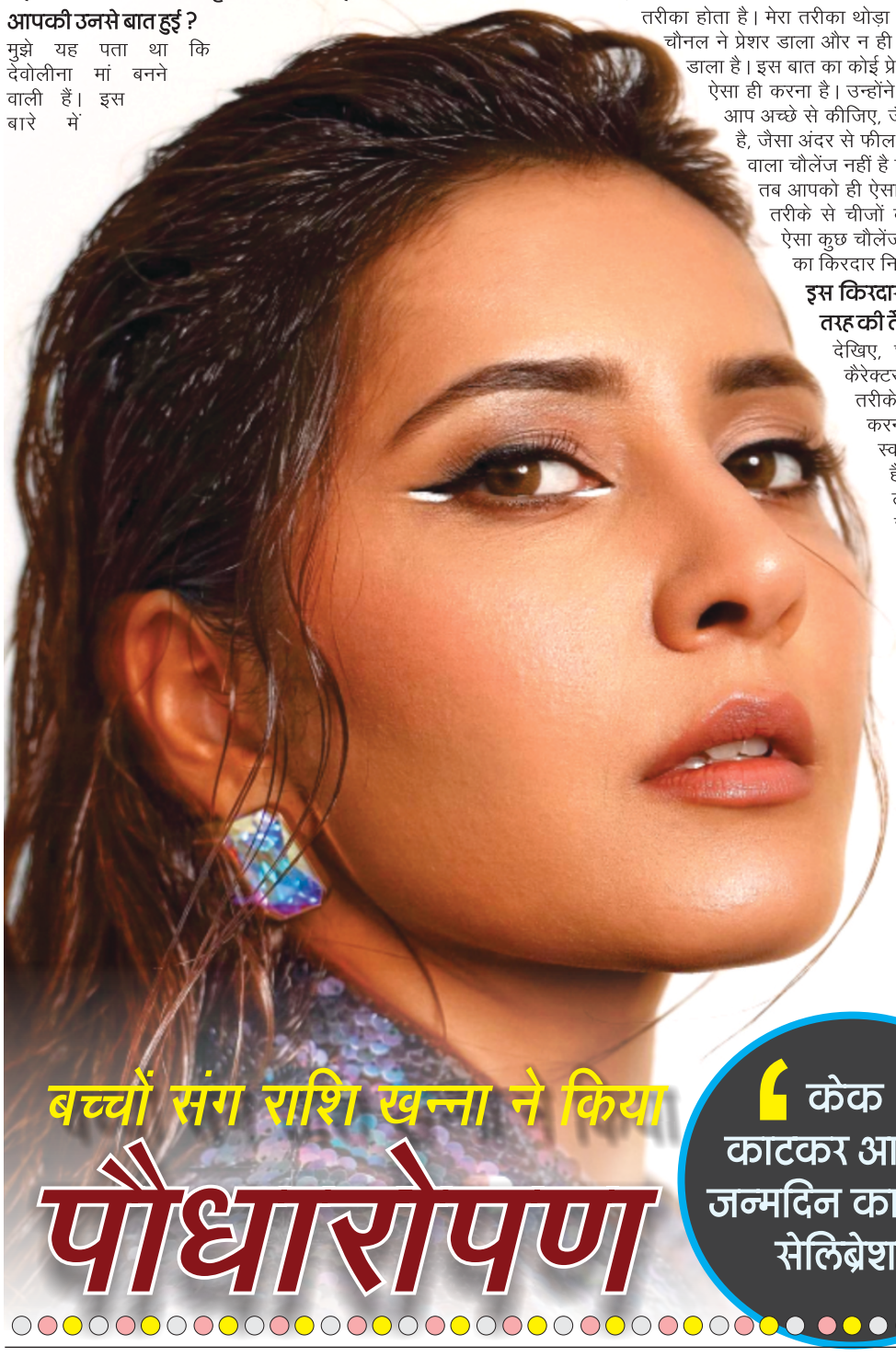

बच्चों संग राशि खन्ना ने किया पौधारोपण

'केक काटकर आगामी जन्मदिन का किया सेलिब्रेशन'

एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेत्री राशि खन्ना ने अपने जन्मदिन से पूर्व स्कूली बच्चों संग मिलकर पौधारोपण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि वो इसके द्वारा लोगों को भी पौधारोपण के प्रति जागरुक करना चाहती हैं। राशि खन्ना ने आज, गुरुवार को अपने जन्मदिन से पहले खास तरह से इसका सेलिब्रेशन किया। अभिनेत्री 30 नवंबर को अपना जन्मदिन मनाती हैं, लेकिन इस बार उन्होंने 100 बच्चों के साथ पौधारोपण कर लोगों को भी इसके लिए प्रेरित किया है। इस दौरान स्कूल के बच्चे भी उनके साथ बढ़चढ़ कर पौधारोपण करते नजर आए। वहीं, कुछ बच्चों ने उनका ऑटोग्राफ भी लिया।

बच्चों संग केक काटकर किया सेलिब्रेट

इस दौरान राशि खन्ना ने पीले रंग का सूट पहना हुआ था, जिसमें वो काफी खूबसूरत लग रही थीं। पौधारोपण के बाद अभिनेत्री ने स्कूली बच्चों के साथ केक काटकर अपने आगामी जन्मदिन का जश्न मनाया।

काशी विश्वनाथ के करेंगी दर्शन

अभिनेत्री ने बताया कि वह इसके बाद वाराणसी जाएंगी, जहां वो काशी विश्वनाथ मंदिर में मत्था टेकेंगी। अभिनेत्री ने कहा कि वह हर साल भगवान के साथ ये सेलिब्रेट करती हैं। इसके अलावा उन्होंने कहा कि वो पिछले चार साल से वो पौधा रोपण कर रही हैं। उन्होंने बताया कि वो बॉम्बे में बड़े स्तर पर पौधा रोपण कर लोगों को भी इसके लिए जागरुक करना चाहती हैं।

राशि ने की अपनी फिल्म देखने की अपील

इस बातचीत में आगे बात करते हुए अभिनेत्री ने अपनी हालिया रिलीज फिल्म द साबरमती रिपोर्ट पर कहा कि 29 नवंबर को सिनेमा डे है, जिस वजह से उनकी हालिया रिलीज फिल्म की टिकट मात्र 99 रुपए की होगी, इसलिए उन्होंने लोगों से आग्रह करते हुए कहा कि लोग उनकी फिल्म जरूर देखें। इस दौरान उन्होंने कहा कि उनके अंदर आज भी एक बच्ची जिंदा है, इसलिए उन्हें इन बच्चों से मिल कर काफी अच्छा लगा।

टीम इंडिया से मिले आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री

कोहली से बोले– पर्थ में आपका प्रदर्शन शानदार
बुमराह से कहा– आपका अंदाज अलग

ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने गुरुवार को कैनबरा में टीम इंडिया से मुलाकात की। टीम इंडिया अभी पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है। दूसरा टेस्ट एडिलेड में 6 दिसंबर से खेला जाना है। उससे पहले कैनबरा में प्रधानमंत्री इलेवन और टीम इंडिया के बीच प्रैक्टिस मैच खेला जाना है। भारतीय टीम 28 नवंबर की सुबह पर्थ से कैनबरा पहुंची थी।

अल्बनीज के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल से इस मुलाकात की फोटो शेयर की गई है। इस मौके पर अल्बनीज ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना संदेश भी दिया और कहा कि उन्हें अब भी उम्मीद है कि ऑस्ट्रेलियाई टीम वापसी करेगी। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखे पोस्ट में कहा, इस सप्ताह मनुका ओवल में एक शानदार भारतीय टीम के खिलाफ पीएम इलेवन के लिए बड़ी चुनौती है।

बुमराह और विराट से की बातचीत

अल्बनीज ने भारतीय टीम के साथ बातचीत भी की। कप्तान रोहित शर्मा ने टीम के साथियों से उनका परिचय कराया। इस अवसर पर अल्बनीज ने जसप्रीत बुमराह से कहा कि उनका अंदाज बाकी किसी भी गेंदबाज से काफी अलग है। उन्होंने विराट कोहली से कहा कि पर्थ में आपका प्रदर्शन काफी शानदार रहा। आपने उस वक्त पारी खेली जब हम पहले से ही बैकफुट पर थे और नुकसान झेल रहे थे। कोहली ने जवाब देते हुए कि हमेशा उसमें कुछ मसाला जोड़ना अच्छा लगता है।

भारत ने पर्थ टेस्ट 295 रन से जीत

भारतीय टीम ने सोमवार, 26 नवंबर को पर्थ टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया को 295 रन से हराया। चौथे दिन 534 रन चेज कर रही कंगारू टीम दूसरी पारी में 238 रन पर ऑलआउट हो गई। भारत ने 6 विकेट पर 487 रन पर दूसरी पारी घोषित कर दी थी। टीम इंडिया ने पहली पारी में 150 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 104 रन पर सिमट गई थी। कप्तान जसप्रीत बुमराह ने 8 विकेट लिए। उन्होंने पहली पारी में 5 और दूसरी पारी में 3 विकेट झटके।

आस्ट्रेलिया सरकार का यह मंत्री भी है कोहली का प्रशंसक, भारतीय बल्लेबाज के साथ साझा की तस्वीर

स्पोर्ट्स डेस्क। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने रोहित शर्मा की अगुआई वाली टीम और ऑस्ट्रेलिया की पीएम इलेवन टीम से संसद में मुलाकात की थी। इस दौरान वॉट्स भी मौजूद थे और उन्होंने इंस्टाग्राम पर भारतीय बल्लेबाज के साथ अपनी तस्वीर भी साझा की। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली के प्रशंसक दुनिया भर में हैं। कोहली फिलहाल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चल रही पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का हिस्सा हैं और इस वक्त ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गए हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया के सहायक विदेश मंत्री टिम वॉट्स भी कोहली के फैन हैं और

कोहली के साथ आस्ट्रेलिया के मंत्री टिम वाट्स -

उन्होंने पार्लियामेंट हाउस में कोहली के साथ मुलाकात की। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने रोहित शर्मा की अगुआई वाली टीम और ऑस्ट्रेलिया की पीएम इलेवन टीम से संसद में मुलाकात की थी। इस दौरान वॉट्स भी मौजूद थे और उन्होंने इंस्टाग्राम पर भारतीय बल्लेबाज के साथ अपनी तस्वीर भी साझा की। उन्होंने इसके साथ ही रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की जर्सी पहने भी अपनी एक तस्वीर शेयर की।

आरसीबी के समर्थक हैं वाट्स

वॉट्स ने कोहली के साथ हुई बातचीत का भी खुलासा किया और बताया कि वह आईपीएल में आरसीबी का समर्थन करते हैं क्योंकि वही एक समय है जब वह कोहली का समर्थन कर सकते हैं। वॉट्स ने कोहली की ऑस्ट्रेलियाई टीम के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी को स्वीकार किया और कहा कि कोहली वर्षों से कंगारू टीम के खिलाफ कितना अच्छा खेलते आए हैं। वॉट्स ने कैप्शन में लिखा, पार्लियामेंट हाउस में आज प्रधानमंत्री एकादश के खिलाड़ी और भारतीय टीम के साथ मिलना सुखद रहा। मैंने कोहली से कहा कि मैं आईपीएल में आरसीबी का समर्थन करता हूं क्योंकि एक वही समय है जब मैं उनके लिए चियर कर सकता हूं। मुझे उन्हें खेलते देखना पसंद है क्योंकि वह किसी ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी की तरह ही खेलते हैं, लेकिन तब अच्छा नहीं लगता जब वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलते हैं।

100 साल बाद टेस्ट में 14 ओवर से पहले ढेर हुई टीम

दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध पहले टेस्ट में श्रीलंका 42 रन पर ढेर
मार्को यानसेन ने करियर का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन करते हुए झटके सात विकेट
100 साल बाद श्रीलंकाई टीम 14 ओवर के अंदर हुई आलआउट

42 श्रीलंका पर आलआउट

दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज मार्को यानसेन 7 विकेट की घातक गेंदबाजी के सामने श्रीलंकाई बल्लेबाजों ने सरेंडर किया। श्रीलंकाई टीम पहले टेस्ट की पहली पारी में केवल 42 रन पर ढेर हो गई और इसी के साथ उसके नाम एक शर्मनाक रिकार्ड दर्ज हो गया। श्रीलंकाई टीम अपने टेस्ट इतिहास के सबसे छोटे स्कोर पर आलआउट हुई। दक्षिण अफ्रीका पहले टेस्ट में ड्राइविंग सीट पर है।

यानसेन के आगे नहीं टिके बैटर्स

अपने घर पर न्यूजीलैंड को टेस्ट सीरीज में पटखनी देने वाली श्रीलंकाई टीम जब बल्लेबाजी करने उतरी तो यानसेन की स्विंग और गति के आगे टिक नहीं पाई। उसके नौ बल्लेबाज दहाई के आंकड़े तक नहीं पहुंच सके तो इनमें से पांच तो खाता भी नहीं खोल पाए। केवल कमिंडु मेंडिस (13) और लाहिरू कुमारा (10) ही दहाई के आंकड़े तक पहुंचे। यानसेन की घातक गेंदबाजी से दक्षिण अफ्रीका ने पहली पारी में 149 रन की बढ़त ले ली। दक्षिण अफ्रीका ने दूसरे दिन स्टंप्स तक अपनी बढ़त 281 रन की कर ली है जबकि उसके सात विकेट शेष हैं।

मैच का हाल

दक्षिण अफ्रीका की पहली पारी 191 रन पर ऑलआउट हुई, जिसके जवाब में श्रीलंकाई टीम केवल 42 रन पर ढेर हो गई। दूसरे दिन स्टंप्स तक दक्षिण अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी में 40 ओवर में 3 विकेट खोकर 132 रन बनाए। मौजूदा स्थिति को देखा जाए तो दक्षिण अफ्रीका टेस्ट जीतने का प्रबल दावेदार नजर आ रहा है।

टेस्ट में श्रीलंका का न्यूनतम स्कोर

42, बनाम द. अफ्रीका, डरबन, 2024
71, बनाम पाकिस्तान, कैंडी, 1994
73, बनाम पाकिस्तान, कैंडी, 2006
81, बनाम इंग्लैंड, कोलंबो, 2001
82, बनाम भारत, चंडीगढ़, 1990
82, बनाम इंग्लैंड, कार्डिफ, 2011

टेस्ट इतिहास में सबसे कम स्कोर पर अश्वलआउट होने वाली टीमें

न्यूजीलैंड – 26
दक्षिण अफ्रीका – 30
दक्षिण अफ्रीका – 30
दक्षिण अफ्रीका – 35
दक्षिण अफ्रीका – 36
ऑस्ट्रेलिया – 36
भारत – 36
आयरलैंड – 38
न्यूजीलैंड – 42
ऑस्ट्रेलिया – 42
भारत – 42
श्रीलंका – 42
दक्षिण अफ्रीका – 43

नई दिल्ली। 1924 में इंग्लैंड के विरुद्ध एजबेस्टन में दक्षिण अफ्रीका की टीम 30 रन पर ढेर हो गई थी और तब पारी में केवल 12.3 ओवर फेंके गए थे। अब 100 साल बाद श्रीलंकाई टीम दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध पारी में 13.5 ओवर ही खेल पाई और 42 रन पर ढेर हो गई। श्रीलंका के इस दयनीय प्रदर्शन के पीछे रहे आलराउंडर मार्को यानसेन, जिन्होंने केवल 13 रन देकर सात विकेट चटकाए और श्रीलंकाई टीम टेस्ट में अपने सबसे न्यूनतम स्कोर पर ढेर हो गई। दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के बीच पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन मेजबान टीम ने पहली पारी में 191 रन बनाए। उसके लिए कप्तान टेंबा बावुमा ने सर्वाधिक 70 रन की पारी खेली।

खास-खास

13.5 ओवर में श्रीलंकाई टीम ऑलआउट हुई इस मैच में। इससे पहले 1924 में दक्षिण अफ्रीका की टीम इंग्लैंड के विरुद्ध एजबेस्टन में 12.3 ओवर में ही ढेर हो गई थी 7 विकेट 13 रन पर यानसेन ने लिए जो दक्षिण अफ्रीका की ओर से टेस्ट में तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

अजीत अगरकर
अगरकर के नाम वनडे में सबसे तेज अर्धशतक लगाने का रिकॉर्ड है। उन्होंने 21 गेंद में ऐसा किया था

उमेश यादव
टेस्ट की एक पारी के दौरान सबसे ज्यादा स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी का रिकॉर्ड उमेश के नाम है। उन्होंने 310 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की थी

ऐसे गेंदबाज जो बल्लेबाजी में बना चुके विश्व रिकॉर्ड, लिस्ट में बुमराह-अगरकर भी

वसीम अकरम
टेस्ट में एक पारी में सबसे ज्यादा छक्के का रिकॉर्ड वसीम अकरम के नाम है। उन्होंने 12 छक्के लगाए थे

दुनिया में ऐसे गेंदबाज भी हैं जिन्होंने बल्ले से भी कमाल दिखाया है। आइए ऐसे गेंदबाज और उनके रिकॉर्ड के बारे में जानते हैं...

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।